श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

❀ खटरुती ❀

॥ वरखा रुत ॥

राग मलार

मारा वालाजी रे वल्लभ, कहूं एक विनती रे।
मारा करम तणी रे कथाय, सुणो मारी आप वीती रे॥ १ ॥

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से विनती करके कहती हैं, हे मेरे प्यारे वालाजी! मैं अपने किए हुए कर्मों की तथा मेरे ऊपर जो बीती है, उसका हाल सुनाती हूं।

वाला आवयो ते मास असाढ, के रुत मलारनी रे।
जाणूं करी रे वालासूं विलास, लेसूं लाण आधारनी रे॥ २ ॥

हे वालाजी! आषाढ़ का महीना आ गया है। ऋतु मल्हार की है। मेरे मन में चाहना थी कि ऐसी सुन्दर ऋतु में वालाजी (प्रियतम) के साथ मैं विलास करूंगी और अपने प्रीतम के प्रेम का लाभ लूंगी।

मारी जोगवाई हुती जेह, सुफल थासे आवारनी रे।
जाण्यूं आवी माया मांहें, भाजसूं हाम संसारनी रे॥ ३ ॥

सोचती थी कि इस बार मेरा शरीर सफल हो जायेगा और माया के बीच में अपनी संसार की इच्छा पूर्ण कर लूंगी।

वरखा रुते करमे काढी वदेस, अवगुण हुता अपार रे।
हवे एणे समे धणी विना, लेसे कोण सार रे॥ ४ ॥

वर्षा ऋतु में हमारे कर्मों ने परदेश भेज दिया, क्योंकि मुझमें बेशुमार अवगुण थे। अब इस समय धनी के बिना कौन हमारी खबर लेगा?

वाला वरसे ते मेघमलार, वीजलडीना साटका रे।
मूने वालाजी विना आ रुत, लागे अंग झाटका रे॥ ५ ॥

हे वालाजी! मल्हार ऋतु में पानी बरस रहा है और बिजली चमक रही है। हे वालाजी! ऐसी ऋतु में आपके बिना मेरे अंग में झटके लगते हैं।

Nijanand App

मोरलिया करे रे किंगोर, सुणीने गरजना रे।
मारो जीव आकुल व्याकुल थाय, सुणी स्वर कोयलना रे।। ६ ।।

बादलों की गर्जना सुनकर मोर कलोल कर रहे हैं। कोयल की मस्ती भरी आवाज सुनकर मेरे जीव में बहुत अधिक दुःख होता है।

मूने केम करी रैणी जाय, वपैया पिउ पिउ लवे रे।
सुंदरी कहे आवार, तेडो चरणे हवे रे।। ७ ।।

मेरी रात्रि कैसे बीते? पपीहा पिउ-पिउ बोल रहा है। सुन्दरी (श्री इन्द्रावतीजी) कहती हैं, हे वालाजी! मुझे अब अपने चरणों में बुलाओ।

निस दिवस दोहेली थाय, पिउजी विना अंगना रे।
मारूं कालजडूं रे कपाय, मारा वालाजी विना रे।। ८ ।।

प्रीतम के बिना हे धनी! अंगना के दिन-रात बड़ी मुश्किल से कटते हैं। हे मेरे वालाजी! आपके बिना मेरा कलेजा फटता है।

अचके वा वाए, उछले वन वेलडी रे।
हूं तो वालाजी विना रे वदेस, झुरूं छूं एकली रे।। ९ ।।

ऐसे सुन्दर मौसम में हवा रुक-रुक कर आती है, जिससे वन की बेलें उछलती (लहराती) हैं, परन्तु मैं वालाजी के बिना अकेले परदेश में तड़प रही हूं।

मारी वेहेली ते लेजो सार, वालानी हूं विरहणी रे।
मूने दिवस दोहेला जाए, वसेके रैणी रे।। १० ।।

हे मेरे प्रीतम! मैं आपकी विरहिणी हूं। मेरी जल्दी खबर लेना। मेरा दिन बड़ी मुश्किल से बीतता है और विशेषकर रात्रि।

इंद्रावती कहे अवगुण, विसारो अमतणा रे।
में जे कीधां रे अपार, वालाजीसूं अति घणा रे।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे धनी! मेरे अवगुणों, जो मैंने आपसे बेशुमार किए हैं, को भुला दो।

हवे वादल मलियारे मलार, सोभा लिए वनराय रे।
रुचियो ते वरसे मेह, तेडी भीडो अंगनाय रे।। १२ ।।

अब मल्हार ऋतु में बादल घिर रहे हैं। वन की शोभा बढ़ रही है। रुचता और मनभावन पानी बरस रहा है। ऐसे में मुझ अंगना को बुलाकर लिपट जाओ।

धरा ए कीधो सिणगार, डूंगरडा नीलया रे।
एणी रुते रे आधार, करो सीतल काया रे।। १३ ।।

धरती ने चारों ओर की हरियाली से शृंगार किया है। पर्वत भी हरे दिखाई देते हैं। इस ऋतु में, हे मेरे प्रीतम! आकर मेरे अंग को तृप्त (शान्त) करो।

मारी वेहेली ते लेजो सार, नहीं तो जीव चालसे रे।
पछे आवीने लेजो सार, काया पडी हसे रे।। १४ ।।

मेरी जल्दी सुध लेना, नहीं तो जीव निकल जाएगा। बाद में आकर सुध लोगे तो यह तन मुर्दा पड़ा मिलेगा।

Nijanand App

मारा अवगुण घणां रे अनंत, पण छेह केम दीजिए रे।
एणे वचने इंद्रावती अंग, वालो तेडी लीजिए रे।। १५ ।।

हे वालाजी! मुझ में बहुत अवगुण हैं, किन्तु आप तो मेरे पति हैं। जुदाई क्यों देते हो? इन्द्रावती के इन वचनों को सुनकर बुला लीजिए।

|| प्रकरण || १ || चौपाई || १५ ||

|| सरद रुत ||

राग सामेरी

सरदनी रुत रे सोहामणी रलियामणी, मूने वालाजी विना केम जाए हो वालैया।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने खिण वरसां सो थाय, हो वालैया।। १ ।।

हे वालाजी! शरद ऋतु बहुत सुहावनी और रमणीय है, किन्तु आपके बिना यह कैसे बीते? मैं विदेश में हूं। आपकी जुदाई में एक-एक पल सौ-सौ वर्षों के समान बीत रहा है।

वाला जी रे डोहलाते जल वही गया, हवे आव्या ते निरमल नीर।
पिउजी विना हूं एकली, ते तां केम राखूं मन धीर।। २ ।।

हे वालाजी! मटमैला जल बह गया है। अब स्वच्छ पानी आ गया है। हे प्रीतम! ऐसे में अकेली मैं मन में कैसे धीरज धरूं?

वालाजी रे वन छाहूं द्रुम वेलडी, हवे धणी तणी आवार।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने चरणे तेडो आधार।। ३ ।।

हे वालाजी! वन में लताएं वृक्षों पर चिपट रही हैं और अपने प्रीतम की सुध दे रही हैं। हे धनी! मैं विदेश में हूं। मुझे चरणों में बुलाओ।

वालाजी रे नीझर जल रे डूंगर झरे, नदी सर भरिया निवाण।
पण एक जल वालाजी विना, मारा विलखंता सूके प्राण।। ४ ।।

हे वालाजी! पर्वतों से सुन्दर जल के झरने झर रहे हैं। नदी और तालाब भर गए हैं, परन्तु मेरे लिए तो आप ही जल हैं, जिनके बिना मेरे प्राण रो-रोकर सूखे जा रहे हैं।

वालाजी रे जीव मारो मूने दहे, अंग ते उपजे दाझ।
अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो राज।। ५ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपका वियोग मुझे जलाता है। मेरे अंग में विरह की आग लग रही है। मैं जानती हूं कि मेरे बहुत अवगुण हैं, किन्तु, धनी! तुम मन में इनका विचार मत करो।

वालाजी रे श्रावण मासनी अष्टमी, कांई कृष्ण पखनी जेह।
मूने ए रैणी वालाजी विना, घणूं दोहेली गई तेह।। ६ ।।

हे धनी! श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी आई है। आपके बिना मेरी यह रात्रि बड़ी कठिनाई से बीती।

Nijanand App

मारा अवगुण घणां रे अनंत, पण छेह केम दीजिए रे।
एणे वचने इंद्रावती अंग, वालो तेडी लीजिए रे।। १५ ।।

हे वालाजी! मुझ में बहुत अवगुण हैं, किन्तु आप तो मेरे पति हैं। जुदाई क्यों देते हो? इन्द्रावती के इन वचनों को सुनकर बुला लीजिए।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ १५ ॥

॥ सरद रुत ॥
राग सामेरी

सरदनी रुत रे सोहामणी रलियामणी, मूने वालाजी विना केम जाए हो वालैया।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने खिण वरसां सो थाय, हो वालैया।। १ ।।

हे वालाजी! शरद ऋतु बहुत सुहावनी और रमणीय है, किन्तु आपके बिना यह कैसे बीते? मैं विदेश में हूं। आपकी जुदाई में एक-एक पल सौ-सौ वर्षों के समान बीत रहा है।

वाला जी रे डोहलाते जल वही गया, हवे आव्या ते निरमल नीर।
पिउजी विना हूं एकली, ते तां केम राखूं मन धीर।। २ ।।

हे वालाजी! मटमैला जल बह गया है। अब स्वच्छ पानी आ गया है। हे प्रीतम! ऐसे में अकेली मैं मन में कैसे धीरज धरूं?

वालाजी रे वन छाह्यूं द्रुम वेलडी, हवे धणी तणी आवार।
हूं रे वदेसण ना पिउजी, मूने चरणे तेडो आधार।। ३ ।।

हे वालाजी! वन में लताएं वृक्षों पर चिपट रही हैं और अपने प्रीतम की सुध दे रही हैं। हे धनी! मैं विदेश में हूं। मुझे चरणों में बुलाओ।

वालाजी रे नीझर जल रे डूंगर झरे, नदी सर भरिया निवाण।
पण एक जल वालाजी विना, मारा विलखंता सूके प्राण।। ४ ।।

हे वालाजी! पर्वतों से सुन्दर जल के झरने झर रहे हैं। नदी और तालाब भर गए हैं, परन्तु मेरे लिए तो आप ही जल हैं, जिनके बिना मेरे प्राण रो-रोकर सूखे जा रहे हैं।

वालाजी रे जीव मारो मूने दहे, अंग ते उपजे दाझ।
अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो राज।। ५ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपका वियोग मुझे जलाता है। मेरे अंग में विरह की आग लग रही है। मैं जानती हूं कि मेरे बहुत अवगुण हैं, किन्तु, धनी! तुम मन में इनका विचार मत करो।

वालाजी रे श्रावण मासनी अष्टमी, कांई कृष्ण पखनी जेह।
मूने ए रैणी वालाजी विना, घणूं दोहेली गई तेह।। ६ ।।

हे धनी! श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी आई है। आपके बिना मेरी यह रात्रि बड़ी कठिनाई से बीती।

Nijanand App

वालाजी रे एम तमे मोसूं कां करो, मारा हो प्राणनाथ।
आवी करूं तमसूं गुझडी, मारी वीतकनी जे वात।।७।।

हे मेरे प्राणनाथ! आप मुझसे ऐसा क्यों करते हो? मैं आऊंगी और मेरे ऊपर जो बीती है उनकी गुझ (गुह्य) बातें बताऊंगी।

वालाजी रे अष्टमी भादरवा तणी, कांई सुकल पखनी रात।
ए रैणी रुडीय छे, मारा जनम संघाती साथ।।८।।

हे वालाजी! भाद्रपद (भादों) मास के शुक्ल पक्ष (उजाला पक्ष) की अष्टमी (राधा अष्टमी) की रात आई है। यह रात्रि बड़ी अच्छी है। पर मेरे जन्म-जन्म के (हमेशा के) साथी आप ही मेरे पास नहीं हैं।

वालाजी रे में तां एम न जाण्यूं, जे मोसूं थासे एम।
जो हूं जाणूं करसो विरहणी, तो कंठ बांहोंडी टालूं केम।।९।।

वालाजी! मुझे ऐसा पता नहीं था कि मेरे साथ ऐसी बीतेगी। यदि मुझे यह पता होता कि आप अलग हो जाएंगे और मैं विरहिणी बन जाऊंगी, तो आपके गले से हाथ ही न छोड़ती (आपके चरणों से जुदा न होती)।

वालाजी रे भादरवा मासनी चतुरदसी, कांई अति अजवाली थाय।
एह समे नव साचव्यो, मारूं तरवारे अंग तछाय।।१०।।

हे वालाजी! भादों मास की शुक्ल पक्ष (उजाली) चतुर्दशी की रात आई है। इस समय मैं न संभल सकी। मैं अपने अंग को तलवार से काट डालूं, ऐसा लगता है।

वालाजी ए रैणी रे सिधाविया, वालो पोहोंता ते धाम मंझार।
एणे समे मूने एकली, तमे कांय राखी आधार।।११।।

इस रात्रि में मेरे वालाजी (श्री देवचन्द्रजी) धाम पधारे। इस समय मुझे अकेली क्यों रखा?

वालाजी रे तमे तो घणुंए जणावियुं, पण में नव जाण्युं हूं अधम।
जो हूं जाणूं थासे एवडी, तो तमने मूकूं केम।।१२।।

हे धनी! आपने तो अच्छी तरह से समझा दिया था, परन्तु मैं ही नीच थी जो नहीं जान सकी। यदि मुझे पता लग जाता कि ऐसा होगा (कि पिया धाम चले जाएंगे) तो आपको कैसे छोड़ती?

वालाजी रे चतुरदसी आसो तणी, कांई ब्रह्मांड थयो प्रकास।
ए रजनी मूने एकली, तमे कांय मूकी निरास।।१३।।

हे वालाजी! आश्विन (कुंवार) महीने की चतुर्दशी में सारे ब्रह्माण्ड में उजाला फैल गया। इस रात्रि में आपने मुझे अकेला छोड़कर निराश क्यों किया? (धनी देवचन्द्रजी प्रगटन महोत्सव)

वालाजी रे पूनम रातनो चांदलो, कांई वन सोभे अपार।
रासनी रातनो ओछव, मूने कां न तेडी आधार।।१४।।

हे धनी! शरद पूनम (पूर्णिमा) की रात की चांदनी में वन की शोभा अपार हो गई है। इस रास की रात्रि के उत्सव में मुझे क्यों नहीं बुलाते।

Nijanand App

वालाजी रे अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो धणी।
विरहणी कहे मूने तम विना, अम ऊपर थई छे घणी।। १५ ।।

हे प्रीतम! मेरे अन्दर तो अनेक अवगुण हैं, पर तुम इन्हें मन में न रखो। विरहिणी श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझ पर आपके बिना बुरी बीत रही है।

वालाजी रे विनता विरहणी केम कीजिए, एवडो न कीजे रोष।
जो जीव देह मूकी चालयो, तमे त्यारे थासो निरदोष।। १६ ।।

हे वालाजी! इतना रोष न करें। अपनी अंगना को विरहिणी न बनाएं। यदि मेरा जीव शरीर छोड़कर चला गया तो क्या आप निर्दोष हो जाएंगे? (नहीं, आप गुनाहगार हो ही जाओगे)।

हवे चित आणी चरणे तेडजो, विरहणी टालो आधार।
एणे वचने इंद्रावतीने, वालो तेडी लेसे तत्काल।। १७ ।।

हे वालाजी! इस विनती को चित्त में धारण कर चरणों में बुलाओ और मेरा वियोग मिटाओ। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे इन वचनों से वालाजी तुरन्त बुला लेंगे।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ३२ ।।

।। हेमन्त रुत (कार्तिक-मगसर) ।।

राग सिंधुड़ा

रुतने आवी रे वालैया हेमनी, मेघलियो गयो पोताने घेर आप।
रुतने सीतल रे लागे मूने दोहेली, हवे मूने कां ना तेडो प्राणनाथ।। १ ।।

हे धनी! हेमन्त ऋतु आई है। बादल अपने घर चले गए। अब ठण्डी हवा मुझे कष्ट देती है। ऐसे में, हे प्राणनाथ! मुझे क्यों नहीं बुलाते?

अंबरियो ने थयो रे वालाजी निरमलो, वादलियो गयो पोताने घेर ठाम।
हजी न संभारो रे वाला तमे विरहिणी, कां न भाजो रे रुदयानी हाम।। २ ।।

आसमान निर्मल हो गया है। बादल अपने घर (ठिकाने) चले गए हैं। इसलिए हे वालाजी! तुम अपनी विरहिणी अंगना को क्यों याद नहीं करते? मेरे हृदय की चाहना क्यों नहीं मिटाते हो?

हो दरसण ने दीजे रे वालैया दया करी, आ रुत में न खमाय।
जुओने विचारी रे वालैया जीवसूं, कालजडूं मारूं मांहें कपाय।। ३ ।।

हे वालाजी! दया करके मुझे दर्शन क्यों नहीं देते? यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। हे वालाजी! आप अपने जीव से (अन्दर) विचार करके तो देखो। मेरा कलेजा अन्दर ही अन्दर फट रहा है।

नैणाने तरसे रे वालाजी ने निरखवा, श्रवणा तरसे वाणी रसाल।
वाचाने तरसे रे वालाजीसूं वातडी, जाणूं करी काढूं रुदयानी झाल।। ४ ।।

हे धनी! यह आंखें आपको देखने के लिए, कान आपकी सुन्दर वाणी सुनने के लिए तथा जबान आपसे बात करने के लिए तरस रहे हैं। ऐसा करके मैं अपने हृदय की तड़प शान्त करलूं।

Nijanand App

वालाजी रे अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो धणी।
विरहणी कहे मूने तम विना, अम ऊपर थई छे घणी।। १५ ।।

हे प्रीतम! मेरे अन्दर तो अनेक अवगुण हैं, पर तुम इन्हें मन में न रखो। विरहिणी श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझ पर आपके बिना बुरी बीत रही है।

वालाजी रे विनता विरहणी केम कीजिए, एवडो न कीजे रोष।
जो जीव देह मूकी चालयो, तमे त्यारे थासो निरदोष।। १६ ।।

हे वालाजी! इतना रोष न करें। अपनी अंगना को विरहिणी न बनाएं। यदि मेरा जीव शरीर छोड़कर चला गया तो क्या आप निर्दोष हो जाएंगे? (नहीं, आप गुनाहगार हो ही जाओगे)।

हवे चित आणी चरणे तेडजो, विरहणी टालो आधार।
एणे वचने इंद्रावतीने, वालो तेडी लेसे तत्काल।। १७ ।।

हे वालाजी! इस विनती को चित्त में धारण कर चरणों में बुलाओ और मेरा वियोग मिटाओ। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे इन वचनों से वालाजी तुरन्त बुला लेंगे।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ३२ ।।

।। हेमन्त रुत (कार्तिक-मगसर) ।।

राग सिंधुड़ा

रुतने आवी रे वालैया हेमनी, मेघलियो गयो पोताने घेर आप।
रुतने सीतल रे लागे मूने दोहेली, हवे मूने कां ना तेडो प्राणनाथ।। १ ।।

हे धनी! हेमन्त ऋतु आई है। बादल अपने घर चले गए। अब ठण्डी हवा मुझे कष्ट देती है। ऐसे में, हे प्राणनाथ! मुझे क्यों नहीं बुलाते?

अंबरियो ने थयो रे वालाजी निरमलो, वादलियो गयो पोताने घेर ठाम।
हजी न संभारो रे वाला तमे विरहिणी, कां न भाजो रे रुदयानी हाम।। २ ।।

आसमान निर्मल हो गया है। बादल अपने घर (ठिकाने) चले गए हैं। इसलिए हे वालाजी! तुम अपनी विरहिणी अंगना को क्यों याद नहीं करते? मेरे हृदय की चाहना क्यों नहीं मिटाते हो?

हो दरसण ने दीजे रे वालैया दया करी, आ रुत में न खमाय।
जुओने विचारी रे वालैया जीवसूं, कालजडूं मारूं मांहें कपाय।। ३ ।।

हे वालाजी! दया करके मुझे दर्शन क्यों नहीं देते? यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। हे वालाजी! आप अपने जीव से (अन्दर) विचार करके तो देखो। मेरा कलेजा अन्दर ही अन्दर फट रहा है।

नैणाने तरसे रे वालाजी ने निरखवा, श्रवणा तरसे वाणी रसाल।
वाचाने तरसे रे वालाजीसूं वातडी, जाणूं करी काढूं रुदयानी झाल।। ४ ।।

हे धनी! यह आंखें आपको देखने के लिए, कान आपकी सुन्दर वाणी सुनने के लिए तथा जबान आपसे बात करने के लिए तरस रहे हैं। ऐसा करके मैं अपने हृदय की तड़प शान्त करलूं।

Nijanand App

अंगने तरसे रे वालाजीने भेटवा, जीव तरसे जोवा मांहेली जोत।
जो पेहेलूंने जाणूं रे मोसूं थासे एवडी,तो निध हाथ आवी केम खोत।।५ ।।

वालाजी! मेरा अंग आपसे लिपटने के लिए तरस रहा है और जीव अन्दर के प्रेम के तेज की ज्योति को देखने के लिए तरस रहा है। यदि पहले जानती कि मेरे साथ ऐसा होगा, तो हाथ आयी न्यामत को नहीं गंवाती।

साथने मेली बेठो छो ज्यारे सामटा, त्यारे अम विना तमने केम सुहाय।
मूने रे मारा वालैया तम विना, पलने प्रले काल जेम थाय।।६ ।।

सुन्दरसाथ को इकट्ठा लेकर जब बैठते हो, तो मेरे बिना आपको कैसे अच्छा लगता है? मुझे तो आपके बिना एक पल भी प्रलय काल के समय के समान मालूम होता है।

अवगुण मारा रे वाला अति घणा, धणी विना केहेने कहूं मारा श्री राज।
वालाजी विना रे अंग अगनी बले, देह मांहें उपजे रे दाझ।।७ ।।

हे वालाजी! मेरे अवगुण तो बहुत हैं, पर हे मेरे धनी! आपके बिना मैं किससे कहूं? हे वालाजी! आपके बिना अंग में अग्नि जलती है, जिससे मेरे शरीर में जलन होती है।

वनने छाह्यूं रे वाला द्रुम वेलडी, सीतल धराने सीतल वाए।
सीतल जलने सीतल छांहेडी, पण मारे अंग लागे अति दाहे।।८ ।।

हे धनी! वन के अन्दर वृक्षों पर बेलें छाई हैं। धरती शीतल है, वायु शीतल है। जल शीतल तथा छाया भी शीतल है, परन्तु मेरे अंग में आग लगी है, जो मुझे जला रही है।

हो दाझने भाजो रे वाला मारा अंगनी, जेम मूने थाय करार।
सुंदर धणी रे सोहामणां, विरह न खमाए जीवना आधार।।९ ।।

हे वालाजी! मेरे अंग की जलन मिटाओ, जिससे मुझे आराम मिले। हे मेरे धनी! आप रसीले हैं, मुझसे आपका विरह सहन नहीं होता।

अण ने जाण्या रे दुख अनंत सह्या, पण जाण्यूं दुख केम खमाय।
वालाजी विना रे हवे जे घडी, ते ता जीवने कठण घणूं जाय।।१० ।।

अनजानेपन में बहुत कष्ट सहे, पर पहचान कर दुःख सहन नहीं होते? हे प्रीतम! आपके बिना अब जो घड़ी बीतती है, वह जीव को अत्यधिक दुःखदायी होती है।

विखम विरह रे वालैया आ रुतनो, ते ता सुखम थाए मले जीवन।
हवे ने कहो रे वालैया तेम करूं, जीव दुख पामे रे मन।।११ ।।

हे वालाजी! इस ऋतु का विरह बड़ा कठिन है। यह प्रीतम के मिलने पर ही सुख में बदल सकता है। हे धनी! अब जैसा आप कहो, वैसा ही मैं करूं। मेरे जीव और मन दुःखी हैं।

दीपनो मेलो रे ओछव अति भलो, जिहां सिणगार करो धणी सर्व साथ।
एणे रे समे वाला मूने तेडजो, जेम आवीने मलूं मारा प्राणनाथ।।१२ ।।

दीपावली का उत्सव अच्छा है, जिस समय सब साथ और धनीजी शृंगार करते हैं। ऐसे समय में, हे वालाजी! मुझे भी बुलाओ, जिससे आकर हे प्राणनाथ (धनी देवचन्द्रजी) मैं आपसे मिलूं।

Nijanand App

साथने सुणो रे कहूं एक वातडी, धणी मुने देता केटलू मान।
ए सुख मांहेंथी काढी करी, करमे दीधूं ततखिण राण।। १३ ।।

हे साथजी! मेरी एक बात सुनो। मेरे धनी मुझे बहुत मान देते थे। इस सुख में से निकालकर मेरे कर्मो ने तुरन्त ही मुझे वीरान कर दिया।

रणवगडमां साथ हूं एकली, विलखूं रात ने दिन।
जो कोई मानो तो कहे इंद्रावती, रखे कोई करो भारे करम।। १४ ।।

हे साथजी! इस जंगल में रात-दिन मैं अकेली बिलख-बिलखकर रो रही हूं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, यदि कोई मेरी बात मानो तो कोई खोटे कर्म नहीं करना (अहंकार नहीं करना)।

आ वस्ती वसे रे सुंदर सोहामणी, धणी बेठा नौतनपुरी मांहें।
एहज पुरी मांहें अमें रहूं, पण करमे न दिए मेलो क्यांहें।। १५ ।।

यह बस्ती बड़ी सुन्दर और सुहावनी बसी है। इसी नौतनपुरी में अपने धनी बैठे हैं। इसी पुरी में मैं भी बैठी हूं, परन्तु मेरे किए हुए कर्म मिलने नहीं देते।

अनेक विधे रे साथ हूं विलखती, पण मेलो न थाए एक खिण।
ए अचरज तमे जुओ साथजी, करम तणां रे ए छे गुण।। १६ ।।

हे साथजी! मैं अनेक तरह से बिलख-बिलखकर रो रही हूं, लेकिन एक पल के लिए भी मिलाप नहीं होता। हे सुन्दरसाथजी! यह बड़े आश्चर्य की बात देखो। यह मेरे किए कर्म का फल है।

वलीने वसेके रे वज्रलेपणा, मारा जेम करजो मा कोय।
एहज पुरी मांहें अमें रेहेता, रणवगडा जुओ केम होय।। १७ ।।

मेरे बज्रलेप जैसे कर्मों को देखो, मेरे जैसा कोई न करना, वरना एक ही नगर में हम रहते हैं फिर भी देखो मैं वीरान क्यों हो गई?

एणे सर्वे वज्रलेपणा, दुखने दीठा रे अनेक।
हवेने वालाजी रे दया करो, तो टले मारा वज्रलेप।। १८ ।।

इस बज्रलेप जैसे कर्मों के कारण मैंने अनेक दुःख देखे। हे वालाजी! अब आप कृपा करो, तो यह मेरा बज्रलेप टल जाए।

दयाने रखे तमे विसारो, इंद्रावती अलवी रे थाय।
एणे वचने वालोजी तेडसे, अंगना आवीने लाग से पाय।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी दुःखी होकर कहती हैं, हे मेरे धनी! तुम दया को मत भुलाओ। इन वचनों से वालाजी अवश्य ही बुला लेंगे। मैं आपकी अंगना हूं और आकर आपके चरणों में प्रणाम करूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ५१ ॥

॥ सीत रुत (मगसर–पोस) ॥

राग धनाश्री

सीत रुत पिउजी तम विना, मूने अति अलखामणी थाय।
वाए रे उतर केरो वावरो, ते तां मारे तरवारे घाय।। १ ।।

हे पियाजी! आपके बिना यह शीत ऋतु मुझे अधिक चुभने वाली (दुःखदाई) है। उत्तर की हवा चलने लगी है, जो मेरे अंग में तलवार जैसा घाव करती है।

Nijanand App

साथने सुणो रे कहूं एक वातडी, धणी मुने देता केटलू मान।
ए सुख मांहेंथी काढी करी, करमे दीधूं ततखिण राण।। १३ ।।

हे साथजी! मेरी एक बात सुनो। मेरे धनी मुझे बहुत मान देते थे। इस सुख में से निकालकर मेरे कर्मों ने तुरन्त ही मुझे वीरान कर दिया।

रणवगडमां साथ हूं एकली, विलखूं रात ने दिन।
जो कोई मानो तो कहे इंद्रावती, रखे कोई करो भारे करम।। १४ ।।

हे साथजी! इस जंगल में रात-दिन मैं अकेली बिलख-बिलखकर रो रही हूं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, यदि कोई मेरी बात मानो तो कोई खोटे कर्म नहीं करना (अहंकार नहीं करना)।

आ वस्ती वसे रे सुंदर सोहामणी, धणी बेठा नौतनपुरी मांहें।
एहज पुरी मांहें अमें रहूं, पण करमे न दिए मेलो क्यांहें।। १५ ।।

यह बस्ती बड़ी सुन्दर और सुहावनी बसी है। इसी नौतनपुरी में अपने धनी बैठे हैं। इसी पुरी में मैं भी बैठी हूं, परन्तु मेरे किए हुए कर्म मिलने नहीं देते।

अनेक विधे रे साथ हूं विलखती, पण मेलो न थाए एक खिण।
ए अचरज तमे जुओ साथजी, करम तणां रे ए छे गुण।। १६ ।।

हे साथजी! मैं अनेक तरह से बिलख-बिलखकर रो रही हूं, लेकिन एक पल के लिए भी मिलाप नहीं होता। हे सुन्दरसाथजी! यह बड़े आश्चर्य की बात देखो। यह मेरे किए कर्म का फल है।

वलीने वसेके रे वज्रलेपणा, मारा जेम करजो मा कोय।
एहज पुरी मांहें अमें रेहेता, रणवगडा जुओ केम होय।। १७ ।।

मेरे वज्रलेप जैसे कर्मों को देखो, मेरे जैसा कोई न करना, वरना एक ही नगर में हम रहते हैं फिर भी देखो मैं वीरान क्यों हो गई?

एणे सर्वे वज्रलेपणा, दुखने दीठा रे अनेक।
हवेने वालाजी रे दया करो, तो टले मारा वज्रलेप।। १८ ।।

इस वज्रलेप जैसे कर्मों के कारण मैंने अनेक दुःख देखे। हे वालाजी! अब आप कृपा करो, तो यह मेरा वज्रलेप टल जाए।

दयाने रखे तमे विसारो, इंद्रावती अलवी रे थाय।
एणे वचने वालोजी तेडसे, अंगना आवीने लाग से पाय।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी दुःखी होकर कहती हैं, हे मेरे धनी! तुम दया को मत भुलाओ। इन वचनों से वालाजी अवश्य ही बुला लेंगे। मैं आपकी अंगना हूं और आकर आपके चरणों में प्रणाम करूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ५१ ॥

॥ सीत रुत (मगसर–पोस) ॥

राग धनाश्री

सीत रुत पिउजी तम विना, मूने अति अलखामणी थाय।
वाए रे उतर केरो वावरो, ते तां मारे तरवारे घाय।। १ ।।

हे पियाजी! आपके बिना यह शीत ऋतु मुझे अधिक चुभने वाली (दुःखदाई) है। उत्तर की हवा चलने लगी है, जो मेरे अंग में तलवार जैसा घाव करती है।

Nijanand App

हो टाढीने रुत रे वालाजी सीतनी, टाढीने भीनी थाय रात।
एणी रुते केम विसारिए, अरधांग तमारी प्राणनाथ।। २ ।।

इस कड़कती शीत ऋतु में, हे वालाजी! रात भी शीत से भरी है। ऐसी ऋतु में हे मेरे प्राणनाथ! अपनी अंगना को क्यों भुलाते हो?

सीत रुते जल जोनी जामिया, तमे हजिए न ल्यो मारी सार।
जीवने काया नहीं तो मूकसे, ते तमे जोसो निरधार।। ३ ।।

शीत ऋतु में पानी जमकर बर्फ बन गया है। तुम अभी तक मेरी खबर नहीं लेते हो। अब मेरा जीव इस तन को छोड़ देगा। यह तुम निश्चित समझो।

दुःखने दोहेला घणां भोगव्या, पण विरह दुःख में न खमाय।
जीवडो रुए निस दिन पिऊ विना, आंसूडा ते अंग न माय।। ४ ।।

मैंने बड़े कठिन से कठिन दुःख भोगे हैं, परन्तु विरह का दुःख सहन नहीं होता है। प्रीतम के बिना मेरा जीव रात-दिन रोता है और आंखों से आंसू गिरना नहीं रुकता।

जलने सीतल नेणे वही गया, हवे अगिन थई अति जोर।
निस्वासा जेम धमण धमे, बलतो जीव करे रे बकोर।। ५ ।।

आंखों से शीतल जल बह गया है, अब शरीर में विरह की अग्नि धधक रही है जिस तरह से धौंकनी (धमनी) के समान मेरी सांस चल रही है, जिसमें मेरा जलता हुआ जीव पुकार कर रहा है।

एवी टाढी रुते रे दंतडा खडखडे, अंग चामी चरमाय।
एकने पिउजी तम विना, कई कई आवटणी थाय।। ६ ।।

ऐसी ठंडी ऋतु में दांत कटकटाते हैं (बजते हैं)। चमड़ी सिकुड़ गई है। हे मेरे धनी! आपके बिना मैं तरह-तरह से संकट सह रही हूं।

सीत रुते पत्र जेम हारव्या, जेम वसंत विना वनराय।
रंगने रूप रुत हरी लिए, पछे सूकीने भाखरिया थाय।। ७ ।।

शीत ऋतु में पत्ते झड़ जाते हैं और पूरा वन वीरान सा लगता है। जिस वन का रंग-रूप शीत ने छीन लिया हो और पीछे सूखकर पपड़ी (पत्ते के समान) हो गया हो।

आ रुतें अगनी जोर बले, वाएने अगिन टाढी वाए।
हेमने पडे रे बले सर्व वनस्पति, वलीने वसेके दाझे दाहे।। ८ ।।

हे वालाजी! यह शीत ऋतु की ठण्डक आग की तरह जलाती है। ऊपर से ठण्डी हवा उसे और भड़काती है। वन की वनस्पति पर पाला (हिम-बर्फ) पड़ने से सारी वनस्पति जल जाती है। उसी तरह मेरे अंग को आपके विरह की अग्नि इस शीत रूप में जलाती है।

तेम मारा जीवने तम विना, आ रुत एणी पेरे जाय।
हवे रखे राखो खिण तम विना, हूं वली वली लागूं छूं पाय।। ९ ।।

इस तरह से आपके बिना मेरी यह ऋतु बीत रही है। वालाजी! मैं बार-बार पैर पड़ती हूं। अब एक क्षण के लिए अपने से जुदा न रखो।

Nijanand App

ए रुत वाला मूने एम थई, हजी दया तमने न थाय।
नौतनपुरी मेलो केम थासे, ज्यारे जीव निसरीने जाय।। १० ।।

हे वालाजी! मुझे यह ऋतु ऐसी कष्टदाई हो गई है। फिर भी आपके मन में दया नहीं आती। जब जीव ही निकल जाएगा तो नौतनपुरी में मिलाप कैसे होगा?

मायानो मेलो घणूं दुर्लभ, नहीं आवे ते बीजी वार।
रखे जाणे माया मेलो न थाय, ते माटे करूं छूं पुकार।। ११ ।।

माया में मिलना बड़ा कठिन है, क्योंकि दूसरी बार यहां नहीं आना है। मैं इसीलिए पुकार करती हूं कि कहीं ऐसा न हो कि मैं आपसे माया में न मिल सकूं?

मूं विरहणी नो विरह भाजजो, तमे छो दयावंत।
वलवलती करूं विनती, पछे आवसे ते मारो अंत।। १२ ।।

मुझ विरहिणी का विरह मिटा दो। आप तो बड़े दयावान हैं। बिलबिलाकर विनती करती हूं। नहीं तो इसके बाद मेरा मरण हो जाएगा।

वेल थासे जो ए वातनी, ते ता दुख करसो निरधार।
जो जीव काया मूकी चालसे, पछे करसो कायानी सार।। १३ ।।

इस बात में यदि देर हुई तो निश्चित ही आप दुःखी होंगे। यह जीव यदि शरीर को छोड़कर चला गया तो पीछे शरीर की ही सुध लोगे।

जीवने निसरता घणूं सोहेलूं, कांई दुख न उपजे लगार।
पण विमासी जो विचार करूं, तो माया मेलो केम छाडूं आधार।। १४ ।।

जीव का शरीर से निकलना बड़ा सरल है। इसको जरा भी दुःख नहीं होता, परन्तु सोच विचार करती हूं कि माया में मिले धनी को कैसे छोड़ दूं?

हवे कृपाने सागर तमे कृपा करो, जेम आवीने भीडूं अंग।
मूं विरहिणीना रे वालैया, मूने तेडीने रामत करो रंग।। १५ ।।

हे कृपा निधान! अब कृपा करो जिससे आपके अंगों से लिपट जाऊं। हे वालाजी! मुझ विरहिणी को बुलाकर खेलो। मस्ती से आनन्द मनाओ।

जो तमे भीडो जीवने जीवसूं, तो भाजे मारा अंगनी दाहे।
जीव थाय मारो सकोमल, जेम वसंत मौरे वनराए।। १६ ।।

हे वालाजी! यदि आप मेरे जीव से लिपटें तो मेरे अंग की जलन मिट जाए और मेरा जीव भी ऐसे खिल जाए जैसे बसन्त में सब पेड़ों में फूल खिल जाते हैं (मौर आ जाते हैं)।

वसंत आवे वन विलम करे, मारो जीव मौरे तत्काल।
मूने जेणी खिणें वालोजी मले, हूं तेणी खिण लऊं रंग लाल।। १७ ।।

बसन्त आने पर वन के पेड़ों पर फूल लगने में तो कुछ देर भी होती है, परन्तु मेरा जीव तो तुरन्त खिल जाएगा। जैसे ही वालाजी मुझे मिलेंगे उसी क्षण अपार आनन्द से भर जाऊंगी।

Nijanand App

जेम रंग लिए रे ममोलो, मेह बूठे तत्काल।
तमने मले हूं रंग एम लऊं, इंद्रावती ना आधार।। १८ ।।

हे वालाजी! मेघ की बूंदें पड़ते ही बीर बहूटी (गौरी गायें-गोकल गायें) जैसे मखमल की तरह लाल रंग की हो जाती है। आपके मिलने पर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं भी ऐसे ही लाल रंग ले लूंगी (लाल हो जाऊंगी)।

इंद्रावती आयत करे, मलवाने उलास।
एणे वचने वालोजी तेडसे, जइ करसूं वालाजी सों विलास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी मन में उमंग भर मिलने की चाहना से कहती हैं कि इन वचनों से वालाजी बुला लेंगे और मैं जाकर वालाजी से आनन्द करूंगी।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ७० ।।

।। रुत वसंतनी (फागुन-चैत) ।।

राग वसंत

रुतडी आवी रे मारा वाला, वसंत रुत रलियामणी।
तम विना मारा धणी धामना, लागे अलखामणी।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! बड़ी मनभावनी बसन्त ऋतु आई है, किन्तु आपके बिना दुःखदाई लगती है।

तमे पडदा पाछा कीधां पछी, वली आवी ते आ वसंत।
ते पछी तमसूं रमवानी, लागी छे खरी मूने खंत।। २ ।।

आपने मुंह पर पर्दा कर लिया था (प्रणाम स्वीकार नहीं किया)। उसके बाद फिर यह बसन्त ऋतु आई है। इस ऋतु में आपसे खेलने की मुझे बड़ी चाहना है।

हवे ततखिण तेडजो मारा वाला, आ रुत एकला न जाय।
धणी विना कामनी घणूं कलपे, रोता ते वाणू वाय।। ३ ।।

हे मेरे धनी! अब आप तुरन्त बुलाना जिससे यह ऋतु भी अकेले न बीते। पति के बिना पत्नी बिलख-बिलख कर रोती है और रोते-रोते सवेरा होता है।

दिन दोहेला जाय घणूं मूने, वली वसेके वसंत।
ते तमे जाणो छो मारा वाला, जे विध जीव ने वहंत।। ४ ।।

मेरे खास कर यह बसन्त ऋतु के दिन बड़ी कठिनाई से बीत रहे हैं। हे मेरे वालाजी! मेरा जीव जिस तरह से सहन कर रहा है, उसे आप अच्छी तरह से जानते हैं।

रुत मांहें रुत वसंत घणूं रूडी, जेमा मौरे वनराय।
विध विधना रंग लेरे वेलडियो, वनतणे कंठडे वलाय।। ५ ।।

सभी मौसमों में बसन्त का मौसम सर्वश्रेष्ठ है। जिसमें सम्पूर्ण वन कोपल छोड़ता है और बेलें पेड़ों से लिपटी हुई तहर-तरह के रंगों से सजती हैं।

एणी रुते एकलडी मूने, केम मूको छो प्राणनाथ।
जीव सकोमल कूपल मेले, रमवा स्यामलियाने साथ।। ६ ।।

हे मेरे प्राणनाथ! इस ऋतु में मुझे अकेला क्यों छोड़ते हो? मेरा जीव भी इसी तरह छोटी-छोटी कोंपल आपके साथ खेलने से छोड़ेगा।

Nijanand App

जेम रंग लिए रे ममोलो, मेह बूठे तत्काल।
तमने मले हूं रंग एम लऊं, इंद्रावती ना आधार।। १८ ।।

हे वालाजी! मेघ की बूंदें पड़ते ही बीर बहूटी (गौरी गायें-गोकल गायें) जैसे मखमल की तरह लाल रंग की हो जाती है। आपके मिलने पर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं भी ऐसे ही लाल रंग ले लूंगी (लाल हो जाऊंगी)।

इंद्रावती आयत करे, मलवाने उलास।
एणे वचने वालोजी तेडसे, जइ करसूं वालाजी सों विलास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी मन में उमंग भर मिलने की चाहना से कहती हैं कि इन वचनों से वालाजी बुला लेंगे और मैं जाकर वालाजी से आनन्द करूंगी।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ७० ।।

।। रुत वसंतनी (फागुन-चैत) ।।

राग वसंत

रुतडी आवी रे मारा वाला, वसंत रुत रलियामणी।
तम विना मारा धणी धामना, लागे अलखामणी।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! बड़ी मनभावनी बसन्त ऋतु आई है, किन्तु आपके बिना दु:खदाई लगती है।

तमे पडदा पाछा कीधां पछी, वली आवी ते आ वसंत।
ते पछी तमसूं रमवानी, लागी छे खरी मूने खंत।। २ ।।

आपने मुंह पर पर्दा कर लिया था (प्रणाम स्वीकार नहीं किया)। उसके बाद फिर यह बसन्त ऋतु आई है। इस ऋतु में आपसे खेलने की मुझे बड़ी चाहना है।

हवे ततखिण तेडजो मारा वाला, आ रुत एकला न जाय।
धणी विना कामनी घणूं कलपे, रोता ते वाणू वाय।। ३ ।।

हे मेरे धनी! अब आप तुरन्त बुलाना जिससे यह ऋतु भी अकेले न बीते। पति के बिना पत्नी बिलख-बिलख कर रोती है और रोते-रोते सवेरा होता है।

दिन दोहेला जाय घणूं मूने, वली वसेके वसंत।
ते तमे जाणो छो मारा वाला, जे विध जीव ने वहंत।। ४ ।।

मेरे खास कर यह बसन्त ऋतु के दिन बड़ी कठिनाई से बीत रहे हैं। हे मेरे वालाजी! मेरा जीव जिस तरह से सहन कर रहा है, उसे आप अच्छी तरह से जानते हैं।

रुत मांहें रुत वसंत घणूं रूडी, जेमा मौरे वनराय।
विध विधना रंग लेरे वेलडियो, वनतणे कंठडे वलाय।। ५ ।।

सभी मौसमों में बसन्त का मौसम सर्वश्रेष्ठ है। जिसमें सम्पूर्ण वन कोपल छोड़ता है और बेलें पेड़ों से लिपटी हुई तहर-तरह के रंगों से सजती हैं।

एणी रुते एकलडी मूने, केम मूको छो प्राणनाथ।
जीव सकोमल कूपल मेले, रमवा स्यामलियाने साथ।। ६ ।।

हे मेरे प्राणनाथ! इस ऋतु में मुझे अकेला क्यों छोड़ते हो? मेरा जीव भी इसी तरह छोटी-छोटी कोंपल आपके साथ खेलने से छोड़ेगा।

Nijanand App

अमृत वा वाए वसंतनो, लेहेरो लिए वनराय।
ए रुत देखी जीवन विना, ते मारे जीवे न खमाय।।७।।

बसन्त ऋतु में अमृत के समान हवा बहती है जिससे वन मस्ती में झूमते हैं। ऐसी मस्त ऋतु को देखकर प्रीतम के बिना मेरे जीव से सहन नहीं होता है।

हवे केही विध करूं रे वाला, तमे कां थया मोसूं एम।
मूने मेली एकलडी, तमे बेससो करारे केम।।८।।

हे वालाजी! आप मेरे से ऐसे क्यों हो गए हैं? अब मैं क्या करूं? मुझे अकेली छोड़कर क्या आप चैन से बैठ सकोगे?

जो अनेक अवगुण होय मारा, तोहे तमे लेसो सार।
अमे कलपतां तमे दुखासो, ते नेहेचे जाणो निरधार।।९।।

मेरे अन्दर अनेक अवगुण भी होंगे, तो भी आप मेरी सुध लोगे। मुझे कलपता हुआ देखकर आप भी दुःखी होओगे। यह बात आप भी निश्चित ही जानें।

में मारा करम भोगवतां, दीठां ते दुख अति घणां।
पण मारा दुख देखी तमे दुखाणा, मूने ते दुख साले तम तणां।।१०।।

मैंने अपने किये कर्मों के भोगने में अत्यन्त दुःख देखे हैं। मेरे दुःखों को देखकर आप दुःखी हुए, उसकी मुझे ज्यादा चिन्ता है।

साथ मांहें आवी मारा वाला, अंतराय कीधी मोसूं एह।
आकार तमारो अम समोजी, दुख सुख देखे देह।।११।।

हे मेरे वालाजी! आपने सुन्दरसाथ के बीच में आकर मुझसे इस प्रकार का पर्दा किया है। शरीर तुम्हारा भी हमारे जैसा (समान) है। यह दुःख और सुख तो यह शरीर ही देखता है।

अंतरगत आवी मारा वाला, बेठा छो आकार मांहें।
आकार देह धर्युं मायानूं, ते माटे कोणे न ओलखाए।।१२।।

हे वालाजी! आप भी हमारे जैसे ही आकार (तन) धारण करके बैठे हो। चूंकि आपने माया का तन धारण किया है, इसलिए आपको कोई भी पहचान नहीं पाता।

ए आकार धरी अम मांहें, बेठा छो अंतरीख।
पण केम छाना रहो तमे अम थी, अमे तमारा सरीख।।१३।।

ऐसा तन धारण करके आप हमारे बीच छिपे बैठे हो। आप हमसे कैसे छिपे रहोगे? हम भी तो आपके ही समान हैं।

हवे में तमने दीठा जुगते, ओलखिया आधार।
ते माटे तमे तेडजो ततखिण, मलो तो थाय करार।।१४।।

अब मैंने आपको अच्छी तरह जान लिया है और पहचान लिया है। इसलिए, हे वालाजी! आप तुरन्त ही मुझे बुलाओ, जिससे आपसे मिलकर मुझे शान्ति मिल जाए।

Nijanand App

हुतासनी नो ओछव अति रूडो, आवी रमूं अबीर गुलाल।
चोवा चंदन अनेक अरगजा, हूं छांटी करूं वालाजीने लाल।। १५ ।।

होली का उत्सव बहुत ही अच्छा है। मैं आकर अबीर और गुलाल के साथ आपसे खेलूंगी। सुन्दर सुगन्धित तेल, चन्दन, इत्र छिड़क-छिड़क कर हे वालाजी! मैं आपको लाल कर दूंगी।

सुंदरसाथ मलीने रमिए, वालाजीसूं रंग अपार।
लोपी लाज रमूं हूं तमसूं, इंद्रावतीना आधार।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! हम सब मिलकर अपने वालाजी के साथ बड़ी उमंग से खेलें। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मेरे प्रीतम! मैं लोक लज्जा छोड़कर आपके साथ होली खेलूंगी।

हवे वेहेली ते तेडो मारा वाला, रमवा हरख न माय।
सुंदर धणी मारा रे तमने, हूं आवीने जीतूं तेणे ताय।। १७ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे तुरन्त बुलाओ। मेरे मन में खेलने की उमंग समाती नहीं है। हे मेरे सुन्दर धनी! मैं आकर आपको उसी समय जीत लूंगी।

इंद्रावती अरधांग तमारी, कलपे विना धणी धाम।
एणे वचने ततखिण मूने तेडसे, मलीने भाजीस मारी हांम।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपकी अंगना हूं और आपके बिना बिलख रही हूं। यह वचन सुनकर मुझे धनी तुरन्त बुलाएंगे, तो मैं मिलकर अपने मन की तड़प (चाहना) मिटाऊंगी।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ८८ ॥

॥ गरमी रुत (वैसाख–जेठ) ॥

राग काफी धमार

वालाजी विना रुत ग्रीखम हो।। टेक ।।

रुत ग्रीखम वालाजी विना रे, घणूं दोहेली जाय।
पिउजी विना हूं एकली, खिण वरसां सो थाय।। १ ।।

वालाजी के बिना यह गर्मी की ऋतु बड़ी कठिनाई से बीतती है। प्रीतम के बिना मैं अकेली हूं और एक पल सौ वर्ष के समान लग रहा है।

ग्रीखमनी रुत आवी रे वाला, वेलडियो सोहे वनराय।
फूल फल दीसे रे अति उत्तम, एणी रुते वन सोहाय।। २ ।।

हे वालाजी! गरमी की ऋतु आई है। वेलें और वन सब मनमोहक हो गए हैं। फल और फूलों से सजे हुए वन शोभा देते हैं।

घाटी छाह्या सोहे वननी, फूलडे रंग प्रेमल अपार।
एणी रुते मारा वालैया, मूने तेडीने रमजो आधार।। ३ ।।

वन की गहरी छाया है। फूलों की सुगन्ध अपार है। इसलिए, हे प्रीतम! मुझे बुलाकर मेरे साथ खेलो।

Nijanand App

हुतासनी नो ओछव अति रूडो, आवी रमूं अबीर गुलाल।
चोवा चंदन अनेक अरगजा, हूं छांटी करूं वालाजीने लाल।। १५ ।।

होली का उत्सव बहुत ही अच्छा है। मैं आकर अबीर और गुलाल के साथ आपसे खेलूंगी। सुन्दर सुगन्धित तेल, चन्दन, इत्र छिड़क-छिड़क कर हे वालाजी! मैं आपको लाल कर दूंगी।

सुंदरसाथ मलीने रमिए, वालाजीसूं रंग अपार।
लोपी लाज रमूं हूं तमसूं, इंद्रावतीना आधार।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! हम सब मिलकर अपने वालाजी के साथ बड़ी उमंग से खेलें। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मेरे प्रीतम! मैं लोक लज्जा छोड़कर आपके साथ होली खेलूंगी।

हवे वेहेली ते तेडो मारा वाला, रमवा हरख न माय।
सुंदर धणी मारा रे तमने, हूं आवीने जीतूं तेणे ताय।। १७ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे तुरन्त बुलाओ। मेरे मन में खेलने की उमंग समाती नहीं है। हे मेरे सुन्दर धनी! मैं आकर आपको उसी समय जीत लूंगी।

इंद्रावती अरधांग तमारी, कलपे विना धणी धाम।
एणे वचने ततखिण मूने तेडसे, मलीने भाजीस मारी हांम।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपकी अंगना हूं और आपके बिना बिलख रही हूं। यह वचन सुनकर मुझे धनी तुरन्त बुलाएंगे, तो मैं मिलकर अपने मन की तड़प (चाहना) मिटाऊंगी।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ८८ ॥

॥ गरमी रुत (वैसाख–जेठ) ॥

राग काफी धमार

वालाजी विना रुत ग्रीखम हो।। टेक ।।

रुत ग्रीखम वालाजी विना रे, घणूं दोहेली जाय।
पिउजी विना हूं एकली, खिण वरसां सो थाय।। १ ।।

वालाजी के बिना यह गर्मी की ऋतु बड़ी कठिनाई से बीतती है। प्रीतम के बिना मैं अकेली हूं और एक पल सौ वर्ष के समान लग रहा है।

ग्रीखमनी रुत आवी रे वाला, वेलडियो सोहे वनराय।
फूल फल दीसे रे अति उत्तम, एणी रुते वन सोहाय।। २ ।।

हे वालाजी! गरमी की ऋतु आई है। वेलें और वन सब मनमोहक हो गए हैं। फल और फूलों से सजे हुए वन शोभा देते हैं।

घाटी छाह्या सोहे वननी, फूलडे रंग प्रेमल अपार।
एणी रुते मारा वालैया, मूने तेडीने रमजो आधार।। ३ ।।

वन की गहरी छाया है। फूलों की सुगन्ध अपार है। इसलिए, हे प्रीतम! मुझे बुलाकर मेरे साथ खेलो।

Nijanand App

रमवाने जीव तरसे मारो, रूडी रमवानी आ रुत।
खंत खरी मलवानी तमसूं, लागी रही छे मारे चित।।४।।

हे प्रीतम! मेरा जीव आपके साथ खेलने को तरस रहा है। यह ऋतु भी अच्छी खेलने वाली है। अब मेरे मन में आपसे मिलने की सच्ची चाहना है।

कोयलडी टहुंकार करे रे, सुडला करे रे कलोल।
एणी रुते हूं एकलडी, रोई नेंणा करूं रंग चोल।।५।।

कोयल कूक रही है। तोते (पोपट) आनन्द कर रहे हैं। ऐसे समय में मैं रो-रोकर आंखों को लाल कर रही हूं।

वांदर मोर क्रीडे वनमां, आनंद देखी वनराय।
एणे समे वालाजी विना, विरहसूं कालजडूं रे कपाय।।६।।

वानर और मोर वन के आनन्द को देखकर वन में खेल रहे हैं। इस समय वालाजी के विरह से मेरा कलेजा फटा जा रहा है।

भमरा मदया करे रे गुंजार, लई फूलडे बहेकार।
एणी रुते धणी धाम विना, घडी एकते केमे न जाय आधार।।७।।

भंवरे फूलों की सुगन्ध से मस्ती में गूंज रहे हैं। ऐसी ऋतु में हे धाम के धनी! आपके बिना एक घड़ी भी कैसे बीते?

एणी रुते अमने नव तेडो, तो जीव घणुं दुखी थाय।
दिन दोहेला घणुए निगमूं, पण रैणी ते केमे न जाय।।८।।

हे वालाजी! यदि इस ऋतु में आपने न बुलाया तो जीव बहुत दुःखी होगा। मैंने बहुत कठिनाई वाले दिन बिताए हैं, पर रात तो अब किसी तरह से बीतती नहीं है।

कठणाई एवी कां करो वाला, हजी दया तमने न थाय।
बीजा दुख अनेक खमूं, पण धणीनो विरह न खमाय।।९।।

हे वालाजी! अब आप इतने कठोर क्यों बन गए हो? अभी भी आपको दया नहीं आती। दूसरे अनेक दुःख तो मैं सहन कर सकती हूं, परन्तु धनी का विरह सहन नहीं होता।

कलकले जीवने कांपे काया, करे निस्वासा निसदिन।
नैणे जल आवे निझरणां, कोई अखूट थया उतपन।।१०।।

मेरा जीव बिलखता है और शरीर कांपता है। ठंडी आहें दिन-रात चलती हैं। नेत्रों से आंसू झरने की तरह बह रहे हैं। ऐसा झरना, जिसका पानी समाप्त नहीं होता।

एक निस्वासे जीव निसरे, पण दुख खमूं छूं ते जुए विचार।
ते विनती करूं रे वाला, सुणो इंद्रावतीना आधार।।११।।

एक ठंडी आह में जीव को निकाल सकती हूं, परन्तु जीव से विचार कर दुःख को सहन करती हूं। इसीलिए, हे इन्द्रावती के वालाजी! मैं आपसे विनती करती हूं, उसे सुनो।

Nijanand App

देखे जीव दुख घणूं दुर्लभ, मेलो धणीनो आवार।
श्री धाम मधे मेलो सदीवे, पण दुर्लभ मेलो संसार।। १२ ।।

जीव ने बड़े घोर दुःख देखे हैं। इस बार ही धनी मिले हैं। परमधाम में तो सदा मिलना ही है, पर संसार में मिलना कठिन है।

नौतनपुरीमां धणी मलवाने, जीव न मूके काया।
धणीनो विछोडो घेर खिण नहीं, विछोडो मेलो मांहें माया।। १३ ।।

नौतनपुरी में ही धनी से मिलने के लिए यह जीव शरीर नहीं छोड़ रहा है। परमधाम में धनी का वियोग एक पल का भी नहीं है। यह वियोग तो माया के बीच में मिला है।

आ मेलो दुर्लभ ते माटे, नहीं आवे बीजी वार।
ते माटे जीव कलपे मारो, नौतनपुरी मलवा आधार।। १४ ।।

यह मेला इसलिए दुर्लभ है क्योंकि दूसरी बार आना नहीं है। इसीलिए नौतनपुरी में अपने प्रीतम से मिलने के लिए मेरा जीव दुःखी है।

हवे न थाय मेलो श्री देवचन्दजी सों, जो कीजे अनेक उपाय।
घरे मेलो अभंग छे, पण नौतनपुरी ए न थाय।। १५ ।।

अब कितने भी उपाय करें श्री देवचन्द्रजी से मिलाप नहीं होगा। घर में मिलना तो अखण्ड (सदैव) है, परन्तु नौतनपुरी में मिलना नहीं होगा।

सुंदर श्रीमुख वचन सांभरे, त्यारे जीवने कालजे लागे घाय।
पण चूकी अवसर जो हूं पेहेली, तो न आवे हाथ ते दाय।। १६ ।।

जब श्रीमुख के सुन्दर वचनों की याद आती है तो कलेजे में घाव लगते हैं, परन्तु जो मौका पहले गंवा दिया है, अब फिर से दुबारा आने वाला नहीं है।

हवे कलकलीने कहूं छूं रे वाला, मूने तेडजो चरणे।
तेहेने छेह केम दीजिए रे वाला, जे आवी ऊभी सरणे।। १७ ।।

अब बिलखकर मैं कहती हूं कि हे वालाजी! मुझे चरणों में बुलाओ। जो आपकी शरण में आकर खड़ी हो उसको जुदाई कैसे देते हो?

हवे विरह वीटी विनता कहे, रखे खिण लावो वार।
अमने आवी तेडी जाओ, जेम लऊं लाभ मांहें संसार।। १८ ।।

अब विरह से दुःखी हुई आपकी अंगना कहती है कि एक क्षण की भी देरी मत करो और आकर हमको बुलाओ जिससे संसार में लाभ लूं।

आ मायानो मेलो दुर्लभ, जुओने विचारी मन।
लऊं लाभ मलीने तमने, जेम सहु कोई कहे धंन धंन।। १९ ।।

मन से विचार कर देखो तो माया में मिलना कठिन है। मैं आपसे मिलकर लाभ लेना चाहती हूं जिससे सभी कोई मुझे धन्य-धन्य कहें।

Nijanand App

अणजाण्यूं धन गयूं रे अनंत, पण जाण्यूं ते धन केम जाए।
जे निध गई अचेत थकी, हूं दाझूं ते तेणी दाहे।। २० ।।

अनजाने में बहुत सुख खो दिया। अब पहचान करके यह सुख कैसे जाने दूं। जो निधि (न्यामत) अनजाने में चली गयी है उसकी याद मुझे जला रही है।

इंद्रावती कहे आयत करी, एक वार तेडो अमने।
जेम उलट करूं अति घणो, आवीने जीतूं तमने।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी अति चाहना से कहती हैं कि एक बार मुझे बुलाओ, जिससे अत्यन्त उमंग में भरकर आऊं और आपको जीतूं।

में अनेक वार जीत्यो रे आगे, तेतो जाणो छो चित मांहें।
ते माटे मोसूं करो रे अन्तर, पण नाठ्या न छूटसो क्याहें।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं मैंने आपको अनेक बार जीता है, यह आप अच्छी तरह जानते हो, इसीलिए मेरे से छिप रहे हो, परन्तु भागने पर भी मेरे से बच न सकोगे।

हूं जोर करीने ज्यारे आविस इहां, त्यारे तमे करसो केम।
एणे वचने इंद्रावतीए, वालोजी कीधां छे नरम।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, यदि मैं हौसला करके आ ही जाऊंगी तो तुम क्या करोगे? इन वचनों से श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी को नरम कर दिया।

हवे ततखिण तेडवा धणी आवसे, वाले सांभलिया समाचार।
ए वचन सुणीने इंद्रावतीने, वालो रुदयासों भीडसे आधार।। २४ ।।

वालाजी इस समाचार को सुनकर तुरन्त बुलाने के लिए आएंगे। श्री इन्द्रावतीजी के वचन सुनते ही हृदय से लगा लेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ११२ ॥

॥ अधिक मास ॥

राग धनाश्री

सुणोने वालैया, कहूं मारी वीतक वात।
आवडाने दुख तमे कां, दीधां रे निघात।। १ ।।

हे मेरे धनी! सुनो मैं अपनी आप वीती कहती हूं। इतना अथाह दुःख आपने मुझे क्यों दिया?

रुत सघली रे हूं घणूं कलपी, पण वालैए न लीधी मारी सार।
न जाणूं जीव मारो केम करी राख्यो, नहीं तो नव रहे निरधार।। २ ।।

सब ऋतुओं में मैंने बहुत अधिक दुःख उठाया। हे धनी! आपने फिर भी मेरी खबर नहीं ली। पता नहीं आपने मेरे जीव को अब तक जीवित क्यों रखा? नहीं तो निश्चय ही इसे रहना नहीं चाहिए था।

Nijanand App

अणजाण्यूं धन गयूं रे अनंत, पण जाण्यूं ते धन केम जाए।
जे निध गई अचेत थकी, हूं दाझूं ते तेणी दाहे।। २० ।।

अनजाने में बहुत सुख खो दिया। अब पहचान करके यह सुख कैसे जाने दूं। जो निधि (न्यामत) अनजाने में चली गयी है उसकी याद मुझे जला रही है।

इंद्रावती कहे आयत करी, एक वार तेडो अमने।
जेम उलट करूं अति घणो, आवीने जीतूं तमने।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी अति चाहना से कहती हैं कि एक बार मुझे बुलाओ, जिससे अत्यन्त उमंग में भरकर आऊं और आपको जीतूं।

में अनेक वार जीत्यो रे आगे, तेतो जाणो छो चित मांहें।
ते माटे मोसूं करो रे अन्तर, पण नाठ्या न छूटसो क्याहें।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं मैंने आपको अनेक बार जीता है, यह आप अच्छी तरह जानते हो, इसीलिए मेरे से छिप रहे हो, परन्तु भागने पर भी मेरे से बच न सकोगे।

हूं जोर करीने ज्यारे आविस इहां, त्यारे तमे करसो केम।
एणे वचने इंद्रावतीए, वालोजी कीधां छे नरम।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, यदि मैं हौसला करके आ ही जाऊंगी तो तुम क्या करोगे? इन वचनों से श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी को नरम कर दिया।

हवे ततखिण तेडवा धणी आवसे, वाले सांभलिया समाचार।
ए वचन सुणीने इंद्रावतीने, वालो रुदयासों भीडसे आधार।। २४ ।।

वालाजी इस समाचार को सुनकर तुरन्त बुलाने के लिए आएंगे। श्री इन्द्रावतीजी के वचन सुनते ही हृदय से लगा लेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ११२ ॥

॥ अधिक मास ॥

राग धनाश्री

सुणोने वालैया, कहूं मारी वीतक वात।
आवडाने दुख तमे कां, दीधां रे निघात।। १ ।।

हे मेरे धनी! सुनो मैं अपनी आप वीती कहती हूं। इतना अथाह दुःख आपने मुझे क्यों दिया?

रुत सघली रे हूं घणूं कलपी, पण वालैए न लीधी मारी सार।
न जाणूं जीव मारो केम करी राख्यो, नहीं तो नव रहे निरधार।। २ ।।

सब ऋतुओं में मैंने बहुत अधिक दुःख उठाया। हे धनी! आपने फिर भी मेरी खबर नहीं ली। पता नहीं आपने मेरे जीव को अब तक जीवित क्यों रखा? नहीं तो निश्चय ही इसे रहना नहीं चाहिए था।

Nijanand App

सनेह वालाजीनो संभारतां, एक निस्वासे जीव जाए।
पण ए न जाणूं तमे केही विध करीने, जीव राख्यो काया मांहें।। ३ ।।

वालाजी के प्रेम की याद आते ही एक ही आह में जीव निकल जाना चाहिए, पर मैं यह नहीं जानती कि आपने किस तरीके से मुझे जीवित रखा।

ज्यारे जीव हुतो निद्रा मांहें, तेणो ते जुओ विचार।
पण ज्यारे निद्रा उडाडी धणिए, त्यारे केम रहे विना आधार।। ४ ।।

हे धनी! जब मैं नींद में थी (मुझे आपकी पहचान नहीं थी) तब तो जीवित रहा जा सकता था, परन्तु जब आपने नींद उड़ाकर अपनी पहचान करा दी तब आपके बिना जीवित कैसे रहा जा सकता है?

आपोपूं ओलखावी करी, आप रह्या अंत्रीख।
पडदा पाछा कीधां पछी, न जाणूं जीव राख्यो केही रीत।। ५ ।।

आपने अपनी पहचान कराकर अपना शरीर त्याग दिया। आप अन्तरिक्ष में छिप गए। छिपने के बाद भी आपने मुझे कैसे जीवित रखा इसकी जानकारी मुझे नहीं है।

नहीं तो ए निध दीठां पछी, खिण एक अंतर न खमाय।
विध सघली दीसे तम मांहें, ओवारणे इंद्रावती जाय।। ६ ।।

यह जानकारी देने के बाद एक पल के लिए जुदाई सहन नहीं होती, परन्तु आपके अन्दर सब सामर्थ्य दिखाई देती है, इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपके ऊपर बलिहारी जाती हूं।

खटरुत वालाजी रे वही गयूं, तेना थया ते बारे मास।
एवडो विरह केम दीधो रे वालैया, तमने हजी न उपजे त्रास।। ७ ।।

हे मेरे धनी! छः ऋतुएं जिनके बारह मास होते हैं, वह सब चली गईं, परन्तु आपको अभी तक डर नहीं लगता। ऐसा विरह आपने मुझे क्यों दिया?

बार मासना पख चौवीस, तेना त्रणसे ने साठ दिन।
त्रणसे ने साठ वचे रात थई, तमे हजिए न सुणो वचन।। ८ ।।

बारह महीने के चौबीस पक्ष होते हैं, तीन सौ साठ दिन होते हैं और इतनी ही तीन सौ साठ रातें। यह सब बीत गए, फिर भी आप अभी तक मेरी विनती नहीं सुनते हो।

एक दिन रात मांहें साठ घडी, एक घडी मांहें साठ पाणीवल।
एक पाणीवल मांहें साठ पल थाय, तमे एवडा रूसणा कीधां सवल।। ९ ।।

एक दिन और रात में साठ घड़ी होती हैं। एक घड़ी में साठ वल होते हैं और एक वल में साठ पल होते हैं। आप इतने अधिक नाराज होकर बैठे हो?

वलीने वसेके अपर महिनो, अधको ते आव्यो जेठ।
हवे कसने पूरो कसोटिए, तमे पारखूं लेओ छो मारू नेठ।। १० ।।

इसके ऊपर भी एक अधिक महीना जेठ (ज्येष्ठ) का आ गया। अब आप पूरी तरह से कसौटी पर कस रहे हो और मेरी पूरी परीक्षा ले रहे हो।

Nijanand App

हूं अंग राखूं वालाजीसूं मलवा, नहीं तो ततखिण देऊं निवेड।
वली मेलो न आवे नौतनपुरि ए, ते माटे करूं छूं जेड।। ११ ।।

हे मेरे धनी! आपसे मिलने के लिए मैंने शरीर को जीवित रखा है। नहीं तो ततखिन (तत्क्षण) इसका कल्याण कर देती। नौतनपुरी में फिर मिलने का अवसर नहीं मिलेगा, इसलिए मैं देरी कर रही हूं।

वल्लभ तणो विरह में न खमाय, वलीने वसेके हमणां।
प्रमोधपुरी मांहें प्रबोध दीधो, हवे मनोरथ छे अति घणां।। १२ ।।

हे धनी! आपका विरह मुझसे सहन नहीं होता। विशेषकर अब हबसा में आपने ज्ञान दिया है। अब मेरी चाहनाएं और बढ़ गई हैं।

ते माटे हूं विरह सहूं छूं, जीव राखूं समझावी मन।
नौतनपुरी तमसूं मेलो करी, मारे सांभलवा छे श्री मुख वचन।। १३ ।।

इसीलिए मैं आपका विरह सहन करती हूं। मन और जीव को विश्वास दिलाती हूं कि नौतनपुरी में ही आप से मिलन कर आपके मुखारबिन्द से बातें सुननी हैं।

जेणी रुते मूने कीधी परदेसण, वली ते आव्यो असाढ।
हजी विछोडो न भाजो रे वाला, जीवने थई वली वाढ।। १४ ।।

हे वालाजी! जिस ऋतु में आपने मुझे परदेश दिया था, वही फिर से आषाढ़ महीना आ गया है। अभी तक आप इस वियोग को नहीं मिटाते। मेरे जीव को अत्यधिक चोटों से घाव हो गया है।

वाढ वसेके थई जोरावर, ते ऊपर दीधूं वली लोण।
अवगुण मारा तमे आण्या चितसूं, हवे खबर ते लेसे मारी कोण।। १५ ।।

वह घाव बहुत गहरा हो गया है। उस पर आपने नमक छिड़क दिया है। इस तरह से मेरे अवगुणों को आपने चित्त में रख लिया है। अब मेरी कौन खबर लेगा?

मू विलखतां तमे दया न कीधी, हवे स्यो वांक काढूं तमारो।
दिन घणां हूं रहीस तम सारूं, हवे जोजो तमे जोर अमारो।। १६ ।।

मुझे बिलखता देखकर आपको जरा भी दया नहीं आई। अब आपका क्या-क्या कसूर बताऊं? मैं बहुत दिन आपके साथ रही हूं। अब आप मेरी ताकत देखना।

आ पोहोरो छे कठण एवो, तमे थई बेठा अलगां अवल।
कलकल्यानूं इहां काम नहीं, जीतिए पोताने बल।। १७ ।।

यह समय इतना कठिन है और आप पहले से ही अलग होकर बैठ गए हो। इसलिए अब मेरे बिलखने से काम नहीं होगा। अब तो आपको अपनी ताकत से ही जीतना पड़ेगा।

केड बांधीने ज्यारे कीजे उपाय, त्यारे तमे थाओ नरम।
आपोपूं ज्यारे नाखिए आंख मीची, त्यारे तमने आवे सरम।। १८ ।।

कमर कसकर जब उपाय करेंगे तभी आप नरम होंगे। जब आंख बन्द करके आप पर न्योछावर हो जाऊंगी (अर्थात् मर जाऊंगी) तभी आपको शर्म आएगी।

Nijanand App

इंद्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो, जो तमे राखो पोतानी लाज।
ततखिण आवीने तेडी जाओ, जेम काढूं मारा रुदयानी दाझ।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे धनी! मेरी सब मनोकामना पूर्ण करो और अपनी लाज बचाओ। तुरन्त ही आकर के बुला ले जाओ जिससे मेरे हृदय की अग्नि (भभक, हरवाड़) शान्त हो जाए (दुःख निकल जाए)।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १३१ ॥

खटरुती का कलस

राग प्रभाती

वचन वालाजीना वालेरा रे लागे।
मूने मीठरडा रे लागे, संभलाओ चरचा मीठडी वाण रे।
वचन जे तारतम तणा रे, हवे नहीं मूकूं निरवाण रे।। १ ।।

मेरे प्रीतम के वचन मुझे प्यारे लगते हैं और मीठे लगते हैं। इसलिए मुझे चर्चा के मीठे वचन सुनाओ जो तारतम वाणी के वचन हैं। अब मैं निश्चय ही नहीं छोड़ूंगी।

सुणिया जे सुन्दर तणा रे, न मूकिए एह वचन रे।
आटला दिवस में विचार न कीधो, नव लीधूं वचन नूं धन रे।। २ ।।

श्यामाजी (सुन्दरबाई) के जो वचन सुने हैं, उनको नहीं छोड़ूंगी। इतने दिन तक न तो मैंने विचार किया था और न इन वचनों को ग्रहण ही किया था।

घणा दिवस में न जाण्यूं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे।
जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मूने दिध रे।। ३ ।।

हे मेरे धनी! बहुत दिनों तक आपके वचनों रूपी न्यामत को नहीं पहचाना। आपने कृपा करके मेरे जीव की आंखें खोलकर यह निधि दी है।

चरचा जे श्री मुख तणी, सुंदर वाण वचन रे।
एना विचार मोसूं करो रे वाला, मोकलो मेलीने मन रे।। ४ ।।

हे मेरे धनी! मैंने आपके श्रीमुख से सुन्दर वचनों की चर्चा सुनी है। अब आप खुले दिल से उन वचनों पर मेरे से वार्तालाप करो!

पेर पेरनी प्रीछवनी करी रे, विध विधना कहो द्रष्टांत।
वृज रास ने घर तणी, मूने कहो वीतक वृतांत।। ५ ।।

आप तरह-तरह से मुझे समझाओ। तरह-तरह के दृष्टांत दो। ब्रज रास और घर की बीती बातों का वर्णन करो।

आडीका जे तमे कीधां मारा वाला, साथ मलवाने जेह।
तेह तणो विचार करी रे, मूने जुगते प्रीछवो वली एह।। ६ ।।

हे वालाजी! सुन्दरसाथ को इकट्ठा करने के लिए जो आपने आडीका (चमत्कारिक) लीला की थी उसका विचार करके मुझे अच्छी तरह फिर से समझाना।

Nijanand App

इंद्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो, जो तमे राखो पोतानी लाज।
ततखिण आवीने तेडी जाओ, जेम काढूं मारा रुदयानी दाझ।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे धनी! मेरी सब मनोकामना पूर्ण करो और अपनी लाज बचाओ। तुरन्त ही आकर के बुला ले जाओ जिससे मेरे हृदय की अग्नि (भभक, हरवाड़) शान्त हो जाए (दुःख निकल जाए)।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १३१ ॥

खटरुती का कलस

राग प्रभाती

वचन वालाजीना वालेरा रे लागे।
मूने मीठरडा रे लागे, संभलाओ चरचा मीठडी वाण रे।
वचन जे तारतम तणा रे, हवे नहीं मूकूं निरवाण रे।। १ ।।

मेरे प्रीतम के वचन मुझे प्यारे लगते हैं और मीठे लगते हैं। इसलिए मुझे चर्चा के मीठे वचन सुनाओ जो तारतम वाणी के वचन हैं। अब मैं निश्चय ही नहीं छोड़ूंगी।

सुणिया जे सुन्दर तणा रे, न मूकिए एह वचन रे।
आटला दिवस में विचार न कीधो, नव लीधूं वचन नूं धन रे।। २ ।।

श्यामाजी (सुन्दरबाई) के जो वचन सुने हैं, उनको नहीं छोड़ूंगी। इतने दिन तक न तो मैंने विचार किया था और न इन वचनों को ग्रहण ही किया था।

घणा दिवस में न जाण्यूं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे।
जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मूने दिध रे।। ३ ।।

हे मेरे धनी! बहुत दिनों तक आपके वचनों रूपी न्यामत को नहीं पहचाना। आपने कृपा करके मेरे जीव की आंखें खोलकर यह निधि दी है।

चरचा जे श्री मुख तणी, सुंदर वाण वचन रे।
एना विचार मोसूं करो रे वाला, मोकलो मेलीने मन रे।। ४ ।।

हे मेरे धनी! मैंने आपके श्रीमुख से सुन्दर वचनों की चर्चा सुनी है। अब आप खुले दिल से उन वचनों पर मेरे से वार्तालाप करो।

पेर पेरनी प्रीछवनी करी रे, विध विधना कहो द्रष्टांत।
वृज रास ने घर तणी, मूने कहो वीतक वृतांत।। ५ ।।

आप तरह-तरह से मुझे समझाओ। तरह-तरह के दृष्टांत दो। ब्रज रास और घर की बीती बातों का वर्णन करो।

आडीका जे तमे कीधां मारा वाला, साथ मलवाने जेह।
तेह तणो विचार करी रे, मूने जुगते प्रीछवो वली एह।। ६ ।।

हे वालाजी! सुन्दरसाथ को इकट्ठा करने के लिए जो आपने आडीका (चमत्कारिक) लीला की थी उसका विचार करके मुझे अच्छी तरह फिर से समझाना।

Nijanand App

तारतम तणो विचार करो रे, पेहेलो फेरो थयो केही पेर।
केणी पेरे मनोरथ कीधां, जाग्या केही पेरे घेर।।७।।

तारतम वाणी से विचार करके देखो। पहला फेरा (ब्रज, रास) किस तरह से हुआ। किस तरह से आपने हमारी चाहना पूर्ण की। उसके बाद कैसे अपने घर (परमधाम) में जागे।

आणे फेरे अमे केम करी आव्या, अने तमे आव्या छो केम।
तमे कोण ने तम मांहें कोण, मूने कहीने प्रीछवो वली एम।।८।।

इस फेरे (तीसरा ब्रह्माण्ड) में हम किस तरह से आए और आप किस तरह से आए। आप कौन हैं तथा आपके अन्दर कौन है, मुझे फिर से अच्छी तरह कहकर समझाइए।

पोते प्रगट पधारया छो, आडा देओ छो वृज ने रास।
इंद्रावतीसूं अंतर कां कीधूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब।।९।।

आप स्वयं धाम-धनी पधारे हैं। ब्रज रास की आड़ देते हो। इन्द्रावती से आपने यह भेद क्यों छिपा रखा है, इसका मुझे उत्तर दो। ब्रज रास में कृष्ण नाम के तन तो आपके रूप हैं, साक्षात् तो मेरे पास हो।

आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो छो प्राणनाथ।
दरपणनूं सूं काम पडे, ज्यारे पेहेरयूं ते कंकण हाथ।।१०।।

अपनी पहचान कराने के बाद हे प्राणनाथ! हमें दर्पण दिखाते हो, अर्थात् आप ब्रज और रास के रूपों का सहारा क्यों लेते हो, जबकि आप साक्षात् प्राणनाथ हो। जिस तरह से हाथ में पहने कंकण (कंगन) को शीशे में फिर देखने की जरूरत नहीं होती, अर्थात् आपको साक्षात् देखकर ब्रज और रास के रूपों को याद करने की जरूरत नहीं है। अर्थात् श्री कृष्ण और राधा से अब हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

मूने अमल मायानो जोर हुतो, तमे ते माटे कीधो अंतर।
हवे तमे पडदा टाल्या रे वाला, आप छपसो केही पर।।११।।

मुझे माया का नशा चढ़ा था। इसलिए आपने मेरे से अन्तर किया। अब आपने वह पर्दा हटा दिया है। अब आप किस तरह से छिपोगे?

आपोपूं ओलखावी करी रे, मूने दीधो वदेस।
अवगुण जे में कीधां मारा वाला, तेणी तमे हजी न मूको रीस।।१२।।

आपने अपनी पहचान कराकर मुझे परदेसन कर दिया। हे मेरे धनी! जो अवगुण मैंने किए हैं, उनकी नाराजगी अभी तक क्यों नहीं छोड़ते?

मूने माया लेहेर हुती जोरावर, ते माटे कीधां अवगुणो।
अंध थको ज्यारे पडे रे कुआमां, त्यारे केहो वांक तेहतणो।।१३।।

मुझे माया का अमल (नशा) बहुत अधिक था, इसलिए मैंने अवगुण किए। अन्धा जैसे कुएं में गिर पड़े तो उसका क्या दोष है?

तमे केहेसो ज्यारे तारतम सांभल्यूं, त्यारे अंध केहेवाय केम।
तेह तणो पडउत्तर दऊं, तमे सांभलो द्रढ करी मन।।१४।।

आप कहोगे कि तारतम ज्ञान समझने के बाद अन्धा कैसे कहा जाए? तो उसका उत्तर देती हूं। तुम दृढ़ मन से सुनो।

Nijanand App

वचन सुण्यां ते ग्रह्या मन मांहें, जीवने मोहजल पूरी लेहेर।
तो दुख तमने देवंतां, जीवने न आव्यो वेहेर।। १५ ।।

आपसे जो वचन मैंने सुने वह मन में ग्रहण किए, परन्तु जीव माया के नशे (अमल) में बेहोश था। इसलिए आपको दुःखी करने में मेरे जीव को कुछ भी संकोच नहीं हुआ।

वली केहेसो जे निरदोष थाय छे, पण नथी थाती निरदोष कांई हूं।
धणी सामी बेसी आ मोहजलमां, लेखूं केणी विधे करूं।। १६ ।।

आप कहोगे कि अपने को बेगुनाह बना रही है। पर हे धनी! मैं अपने को बेगुनाह नहीं मानती। हे धनी ! आपके सामने इस मोहजल (भवसागर) में बैठी हूं तो इसका हिसाब क्या दूं (स्पष्टीकरण कैसे करूं)?

हवे ने कहूं ते सांभलो वाला, हूं विनता वालाजी तमारी।
अवगुण जो अनेक होय मारा, तोहे तमे लेओ ने सुधारी।। १७ ।।

अब मैं कहती हूं, हे धनी! सुनो, मैं आपकी अंगना हूं। मेरे अनेक अवगुण हों तो भी आप सुधार लो।

जे में तमसूं कीधां रे अवगुण, तेणी तमे वालो छो रीस।
आपोपूं ओलखावी करी, तमे दीधो मूने वदेस।। १८ ।।

मैंने आपसे जो अवगुण किए हैं, उसका आप गुस्सा निकालते हो। आपने अपनी पहचान कराकर मुझे विदेश दे दिया।

एक पुरीमां आपण बेठा, मूने कीधी परदेस।
विरह तणी जे वातो मारा वाला, हूं तमने आवी कहेस।। १९ ।।

एक पुरी में (शहर में) ही हम बैठे हैं, फिर भी मुझे परदेश दे दिया। हे मेरे वालाजी! इस वियोग की बातें जब मैं आपके पास आऊंगी, तब करूंगी।

जे विरह तमे दीधो रे वाला, ते सिर ऊपर में सह्यो।
अवगुण साटे तमे ए दुख दीधा, हवे पाड केहेनो नव रह्यो।। २० ।।

हे धनी! आपने जो विरह दिया वह मैंने सहन किया। मेरे अवगुणों के बदले में आपने यह जुदाई का दुःख दिया है। अब किसी का किसी पर कोई एहसान नहीं।

हवे हूं आविस तम पासे, तूं जाइस नाठो क्याहें।
तें छेतरी घणां दिन मूने आगे, ते वार बूठी त्याहें।। २१ ।।

अब मैं आपके पास आऊंगी। आप भागकर कहां जाओगे? आपने बहुत दिन मुझे ठगा है। अब वह समय निकल गया।

अंग उमंग न माये रे वाला, हवे तोसूं करूं केही पर।
पेहेलूं अंग भीडीने दाझ भाजूं, पछे तेडी जाऊं मारे मन्दिर।। २२ ।।

अब मेरे अंग में उमंग नहीं समाती है। अब आपसे क्या बर्ताव करूं? पहले चिपट कर अपने अंग की आग बुझाऊं। फिर पीछे अपने मन्दिर (हृदय रूपी घर) में लाऊं?

Nijanand App

जिहां लगे पाड हुतो मारे माथे, तिहां लगे हुती ओसियाली।
हवे मारी पेर जो जो रे वाला, हूं न टलूं तूंथी टाली।। २३ ।।

जब तक मेरे सिर पर एहसान था, तब तक मैं शर्मिन्दा थी। अब मेरा तरीका देखना। मैं आपके हटाने पर भी नहीं हटूंगी।

हवे हूं जीतूं तूंने जोपे करी, में ओलखियो आधार।
में अनेक वार जीत्यो रे आगे, वलीने वसेके रे आवार।। २४ ।।

अब मैं आपको अच्छी तरह जीतूंगी। मैंने अपने धनी को पहचान लिया है। पहले भी अनेक बार मैं जीती हूं। अब फिर से इस बार भी जीतूंगी।

केही पेरे वाद करीस तूं मोसूं, तूं छे म्हारो जाण्यो।
जिहां जेणी पेरे कहीस रे वाला, तिहां आवीस मारो ताण्यो।। २५ ।।

तुम मुझसे किस तरह झगड़ा करोगे? मैं आपको अच्छी तरह से जानती हूं। हे वालाजी! जहां जिस तरह से कहूंगी वहां आप खिंचे चले आएंगे।

जो एक पग पर राखूं तूंने, तो हूं इंद्रावती नार।
दिन घणा तूं छपयो मोसूं, हवे नहीं छपी सके निरधार।। २६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं आपको एक टांग पर खड़ा रखूं, तभी आपकी अंगना कहलाऊंगी। बहुत दिन तक आप मुझसे छिपते रहे। अब निश्चित ही आप नहीं छिप सकोगे।

हवे जेम नचवूं तेम नाचो रे वाला, आव्या इंद्रावतीने हाथ।
ते वसीकरण नी दोरिए बांधूं, जेम देखे सघलो साथ।। २७ ।।

जैसा नचाऊंगी वैसा ही आप नाचोगे। अब इन्द्रावती के हाथ आये हो। ऐसी वशीकरण की डोरी में बाधूंगी कि सब सुन्दरसाथ देखते ही रह जाएंगे।

जोइए कोंण मुकावे जोरावर, ते कोय देखाडो नार।
मारे मंदिर थकी कोण मुकावसे, वस मारे आव्या आधार।। २८ ।।

देखती हूं कौन ऐसी ताकतवर सखी है जो मेरे हाथ से आपको छुड़ाएगी। आप मेरे वश में आ गए हैं। इसलिए देखती हूं मेरे घर से (हृदय से) आपको कौन ले जाता है?

जे कोई सुंदरी होय रे जोरावर, तेणे सीखवुं वसीकरण वात।
विध विधनी तेणे विद्या देखाडूं, जेणे वस थाय प्राणनो नाथ।। २९ ।।

कोई सखी ताकतवर हो तो आओ। मैं वशीकरण का तरीका (ढंग) सिखाती हूं। तरह-तरह की विद्या करके दिखाऊंगी जिससे अपने प्राणनाथ वश में होते हैं।

देतां विद्या कोई जोर न दाखे, तो सखी बल करी मुकावसे केम।
इंद्रावतीने वस आव्या छो, हवे जेम जाणसे करसे तेम।। ३० ।।

विद्या सिखाते समय सीखने की ताकत नहीं दिखाती हो तो बल करके वालाजी को छुड़ाओगी कैसे? अब हे वालाजी! श्री इन्द्रावती के वश में आये हो। अब जैसा मैं चाहूंगी वैसा आप करोगे।

Nijanand App

सेवा कंठमाला घालूं तेह सनंधनी, पोपट करूं नीलडे पांख।
प्रेमतणा पांजरा मांहें घाली, हूं थाऊं साख ने द्राख।। ३१ ।।

हे धनी! अपनी सेवा से आपके गले की माला बन जाऊंगी। आपको हरे पंखों वाला तोता बनाकर (पालतू तोता) अपने शरीर रूपी पिंजरे में बन्द कर दूंगी। मैं आपके भोजन के लिए पक्के आम और अंगूर बन जाऊंगी।

हवे हूं कहीस तेम तूं करीस, मूने विरह दीधो अति जोर।
तोहे तें मारी खबर न लीधी, में कीधा घणा बकोर।। ३२ ।।

अब जैसा मैं कहूंगी वैसा आप करोगे। आपने मुझे विरह की अग्नि में बहुत जलाया है। मैंने आपको बहुत पुकारा, फिर भी आपने मेरी खबर नहीं ली।

खार हवे ते हूं वालूं रे वाला, घणा दिन हुती रुदे झाल।
ज्यारे में तमने भीड्या जीवसूं, त्यारे रुदे ठरयूं तत्काल।। ३३ ।।

हे वालाजी! बहुत दिन तक मेरे हृदय में विरह की अग्नि जलती रही। इसलिए मैं उसका बदला ले रही हूं। जब मैं आपसे लिपट जाऊंगी तभी मेरे हृदय को शान्ति मिलेगी।

जीव सकोमल कूपल काढ्या, खिण नव लागी वार।
फूले रंग फल फलिया रे, ततखिण रंगे रंग्यो विनता आधार।। ३४ ।।

और जीवों में नई-नई कोपलें निकलीं (चाहना निकली)। जिनके निकलने में एक क्षण की भी देरी नहीं हुई। तुरन्त ही इस जीव रूपी वृक्ष में फूल और फल लग गए। मैं विनता (अंगना) आपके प्रेम में रंग गई।

इंद्रावतीने एकांते हाथ आव्या, हवे जो जो अमारो बल।
ते वसीकरण करूं रे तमने, जेणे अलगां न थाओ नेहेचल।। ३५ ।।

अब इन्द्रावती के हाथ एकान्त में आए हो। मेरी ताकत देखो। आपको ऐसे वशीकरण के बंध में बांधूंगी जिससे आप निश्चित ही छूट न सकोगे।

हवे अधखिण हूं अलगां न करूं, आतमाए लीधी आतम सूं बाथ।
जीत्यो में तूने जोर करी, देखतां सर्व साथ।। ३६ ।।

अब मेरी आत्मा अपने धनी से लिपट गई है (एकाकार हो गई है), इसलिए आधे क्षण के लिए भी अलग नहीं करूंगी। सब सुन्दरसाथ के देखते हुए मैंने आपको अपनी ताकत से जीता है।

तेजसूं तेज करूं रे मेलावो, जोतने जोत छे भेला।
अंग सदीवे छे रे एकठां, परआतम ने मेला।। ३७ ।।

हे धनी! आपके ज्ञान के दीपक से मैं अपने ज्ञान का दीपक जलाऊं। उस ज्ञान की ज्योति से ज्योति को मिलाऊं। हमारा और आपका तन परमधाम में सदा से इकट्ठे हैं। हमारी परात्म परमधाम में मिलकर बैठी हैं।

अनेक वासनाओं तमे ओलखिओ, पण में ओलख्यो धाम धणी।
तें मोसूं टाला घणुंए कीधां, पण में जीत्यो विध घणी।। ३८ ।।

हे धनी! आपने अनेक आत्माओं की पहचान की, परन्तु मैंने धाम के धनी की पहचान की। आपने मुझसे बचने के लिए बहुत उपाय किए। मैंने बहुत ढंग से आपको जीता।

Nijanand App

वासना सकलने तमे परखो छो, जोई सर्वे ना चेहेन रे।
अंग ओलखी श्री धाम मधे, त्यारे देखो आंही ऊभी ऐन रे।। ३९ ।।

हे वालाजी! आप सब आत्माओं को खेल में उनकी रहनी देखकर पहचानते हो। आप परमधाम में उनकी परात्म को देखते हो और खेल में उनके तनों को देखते हो।

में तूंने परख्यो पूरे चेहेनें, अंग ओलख्यूं हूं अरधंग।
में तूंने जीत्यो सघली पेरे, श्री धाम धनी हूं अभंग।। ४० ।।

पर हे धनी! मैंने आपको पूर्ण रूप से पहचान कर देखा, क्योंकि मैं आपकी अंगना हूं। हे राजजी महाराज! हमने आपको हर तरीके से जीता है, क्योंकि मैं आपकी अखण्ड अंगना हूं।

साथ सकलना वचन विचारी, चित्त ओलखो छो सर्वे जाण।
वचन पाधरा प्रगट कहे छे, जे पगलां भरियां प्रमाण।। ४१ ।।

आप सब सुन्दरसाथ के वचनों को विचार कर चित्त में ध्यान कर पहचानते हो। आपके वचनों से साफ जाहिर होता है कि आपने अभी तक जो आत्माएं परखी हैं उनको परखने का यही तरीका रहा है।

श्रीजीना वचन में विचारिया, निध लीधी वचनोनी सार।
विविध पेरे में तूंने रे वाला, हूं जीती धाम धणी आधार।। ४२ ।।

हे धनी! मैंने आपके वचनों का विचार किया और वचनों के सार में से मैंने अखण्ड (सच्ची) वस्तु ले ली। इस तरह से, हे धनी! मैंने आपको हर तरह से जीता है।

चौद भवन जे सुकजीए मथिया, वली पडदे मथिया ब्रह्मांड तीत।
तेहेनो सार तमे प्रगट करी रे, साथने दीधो रूडी रीत।। ४३ ।।

चौदह भुवनों को मथकर शुकदेवजी ने यहां का मिथ्या ज्ञान दिया। ब्रह्माण्ड से ऊपर बेहद का ज्ञान मथा, पर परदे में ही रहा, जाहिर नहीं हुआ। उन सबका सार आपने प्रकट करके सुन्दरसाथ को अच्छी तरह से दिया।

ते मां सारहूं तमतणों मथिया, तेहेनो सार लीधो आधार।
हूं धणियाणी श्री धाम धणीनी, में जीत्यो अनेक वार।। ४४ ।।

आपकी सार वाणी में से मैंने मंथन कर सार निकाला कि आप मेरे धाम के धनी हैं। मैं धाम धनी की अंगना हूं। इसलिए मैंने आपको अनेक बार जीता।

हवे चरणे लागी अंग भीडी इंद्रावती, मूने मारे धणिए कीधी सनाथ।
मनना मनोरथ पूरण करी, वाले लीधी पोताने साथ।। ४५ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी धनी के चरणों में चिपट कर कहती हैं कि मेरे धनी ने मुझे सौभाग्यवती बना लिया और मेरे मन की सब चाहनाओं को पूर्ण करके अपने चरणों में ले लिया।

साथ हतो जे इंद्रावती पासे, वाले पूरी तेनी आस रे।
सकल मनोरथ पूरण थया रे, फलिया ते रास प्रकास रे।। ४६ ।।

हवसा में श्री इन्द्रावतीजी के साथ जो दो और साथी थे, (सांवलिया ठाकुर और ऊधो ठाकुर) उनकी भी चाहना राजजी ने पूर्ण की। इस प्रकार हमारी सब चाहना पूर्ण हो गई। रास और प्रकाश का फल मिल गया अर्थात् धनी मिल गए।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १७७ ॥

Nijanand App

।।अथ बारे मास ।। ।। सरद रुत ।।

राग मलार

पिउजी तमे सरदनी रुते रे सिधाव्या, हांरे मारा अंगडामां विरह वन वाव्या।
ए वन खिण खिण कूपलियो मूके, हां रे मारूं तेम तेम तनडूं सूके।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

शब्दार्थ—हे पिउजी ! आपने भौतिक तन शरद ऋतु में छोड़ा। मेरे तन में विरह के जंगल का बीज बोया। जैसे-जैसे यह विरह रूपी जंगल की पल-पल कोपलें निकलने लगी हैं, वैसे-वैसे ही मेरा तन सूख रहा है।

भावार्थ—हे मेरे धाम धनी! आपने शरद ऋतु में श्री देवचन्द्रजी का तन जैसे ही छोड़ा, वैसे ही मेरे तन में वियोग का विरह पैदा हो गया। जैसे-जैसे वियोग के नए-नए विचार आते हैं एवं आपके गुण याद आते हैं वैसे-वैसे ही मेरा तन विरह में जलकर सूख रहा है। अब मैं पिया-पिया करके आपको पुकार रही हूं।

वाला हूं तो पिउ पिउ करी रे पुकारूं, पिउजी विना दोहेला घणां रे गुजारूं।
हूं तो दुखडा मांहें ना माहेंज मारूं, हूं तो निस्वासा अंग मा उतारूं।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे वालाजी! आपके बिना अत्यन्त कठिनाई से समय बिता रही हूं। इस विरह के दुःख को मैं अन्दर ही अन्दर पी रही हूं (सहन कर रही हूं) ठंडी सांसें ले रही हूं। अब मैं पिया-पिया करके आपको पुकार रही हूं।

वाला मारा भादरवे ते नदी नाला भरिया, पिउजी निरमल जल रे उछलिया।
वाला मारा गिर डूंगर खलखलिया, पिउजी तमे एणे समे हजिए न मलिया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! भादों (भाद्रपद) के महीने में नदी नाले सब भर गए हैं और उनमें निर्मल जल उछल रहा है। पहाड़ों से गिरते हुए पानी की कल-कल की आवाज आती है। ऐसे समय में, हे प्रीतम! मुझे आप नहीं मिले। आपके वियोग में मैं पिया-पिया करके पुकार कर रही हूं।

वाला तमे चालता ते चार दिनडा कह्या, हांरे अमे एणी रे आसाए जोईने रह्या।
वाला अमे वचन तमारा ग्रह्या, हवे ते अवध ऊपर दिनडा गया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

शब्दार्थ—हे मेरे वालाजी! आपने गोकुल से मथुरा जाते समय चार दिन में वापस आने का वायदा किया था। हम आपके वचनों का सहारा लेकर बैठे रहे। अब तो निश्चित समय से भी ऊपर समय बीत गया है। इसलिए अब मैं पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

भावार्थ—हे धनी आपने पांचवें दिन मिलने का वायदा किया था। पहला ब्रज का, दूसरा रास का, तीसरा अरब का, चौथा श्री देवचन्द्रजी का। अब तो निश्चित समय निकल गया है और अभी भी आप आकर मिले नहीं।

Nijanand App

वाला मारा दिनडा आसोना आव्या, हांरे घेर मेघलियो बारे रे सिधाव्या।
हांरे वन वेलडिए रंग सोहाव्या,पिउजी तमे एणे समे वृजडी कां न आव्या।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे मेरे वालाजी! आसो (कुंवार) का महीना आया है तथा वर्षा वाले बादल सब अपने घर वापस चले गए हैं। अब वन और बेलें अधिक शोभा दे रही हैं। हे पियाजी! ऐसे समय में ब्रज में क्यों नहीं आए? इसलिए अब मैं पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

वाला मारा एक वार जुओ वनडू आवी, हां रे चांदलिए जोत चढावी।
वेलडिए वनस्पति रे सोहावी, एणे समे विरहणियो कां विलखावी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे वालाजी! एक बार आकर इस वृन्दावन को देखो। चन्द्रमा की ज्योति से बेलों और वनस्पतियों की शोभा दोगुनी हो गई है। इस समय मुझ विरहिणी को क्यों रुला रहे हो? मैं तो आपके वियोग में तड़प रही हूं और पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ६ ॥

॥ हेमंत रुत (कार्तिक-मगसर) ॥

राग मलार

वाला मारा हेमाले थी हेम रुत हाली, ए तो वेरण आवी रे विरहणियो ऊपर चाली।
वृजडी वीटी रे लीधी वचे घाली, पिउजी तमे हजिए कां बेठा आप झाली।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे पिया! बर्फ से ढके पर्वतों से ठण्डी हवा आ रही है। यह हवा विरहणियों को और जलाने आई है। इसने ब्रज को घेर रखा है। धनी! अब आप जिद करके क्यों बैठे हो? आते क्यों नहीं? मैं पिया-पिया कहकर पुकार रही हूं।

रे विरही तमे विरहणियो ने कां न संभारो, नंद कुंअर नेहडो छे जो तमारो।
वाला मारा दोष घणो रे अमारो, पिउजी तमे एणी विधे अमने कां मारो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे बिछुड़े प्रीतम! तुम अपनी विरहणियों को क्यों याद नहीं करते? हे नन्द कुंवर! आपका भी तो हमसे प्यार है। वालाजी! मेरे अन्दर बहुत अवगुण हैं, परन्तु आप इस तरह से हमें क्यों मारते हो? हे श्याम! मैं तो पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा कारतकियो अंगडा कापे, नाहोलिया तारो नेहडो वाले मूने तापे।
वाला मूने गुण अंग इंद्रियो रे संतापे, पिउजी विना दुखडा ते सहु मूने आपे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे मेरे वालाजी! कार्तिक मास की ठण्डी हवाओं से मेरा तन कांप रहा है। हे प्रीतम! आपका प्रेम मुझे जला रहा है। मेरा रोम-रोम मुझे दुःखी कर रहा है। जिससे पिया-पिया करके मैं पुकारती हूं।

Nijanand App

वाला मारा दिनडा आसोना आव्या, हरि घेर मेघलियो बारे रे सिधाव्या।
हांरे वन वेलडिए रंग सोहाव्या,पिउजी तमे एणे समे वृजडी कां न आव्या।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे मेरे वालाजी! आसो (कुंवार) का महीना आया है तथा वर्षा वाले बादल सब अपने घर वापस चले गए हैं। अब वन और बेलें अधिक शोभा दे रही हैं। हे पियाजी! ऐसे समय में ब्रज में क्यों नहीं आए? इसलिए अब मैं पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

वाला मारा एक वार जुओ वनडू आवी, हां रे चांदलिए जोत चढावी।
वेलडिए वनस्पति रे सोहावी, एणे समे विरहणियो कां विलखावी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे वालाजी! एक बार आकर इस वृन्दावन को देखो। चन्द्रमा की ज्योति से बेलों और वनस्पतियों की शोभा दोगुनी हो गई है। इस समय मुझ विरहिणी को क्यों रुला रहे हो? मैं तो आपके वियोग में तड़प रही हूं और पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ६ ॥

॥ हेमंत रुत (कार्तिक-मगसर) ॥

राग मलार

वाला मारा हेमाले थी हेम रुत हाली, ए तो वेरण आवी रे विरहणियो ऊपर चाली।
वृजडी वीटी रे लीधी वचे घाली, पिउजी तमे हजिए कां बेठा आप झाली।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे पिया! बर्फ से ढके पर्वतों से ठण्डी हवा आ रही है। यह हवा विरहणियों को और जलाने आई है। इसने ब्रज को घेर रखा है। धनी! अब आप जिद करके क्यों बैठे हो? आते क्यों नहीं? मैं पिया-पिया कहकर पुकार रही हूं।

रे विरही तमे विरहणियो ने कां न संभारो, नंद कुंअर नेहडो छे जो तमारो।
वाला मारा दोष घणो रे अमारो, पिउजी तमे एणी विधे अमने कां मारो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे बिछुड़े प्रीतम! तुम अपनी विरहणियों को क्यों याद नहीं करते? हे नन्द कुंवर! आपका भी तो हमसे प्यार है। वालाजी! मेरे अन्दर बहुत अवगुण हैं, परन्तु आप इस तरह से हमें क्यों मारते हो? हे श्याम! मैं तो पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा कारतकियो अंगडा कापे, नाहोलिया तारो नेहडो वाले मूने तापे।
वाला मूने गुण अंग इंद्रियो रे संतापे, पिउजी विना दुखडा ते सहु मूने आपे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे मेरे वालाजी! कार्तिक मास की ठण्डी हवाओं से मेरा तन कांप रहा है। हे प्रीतम! आपका प्रेम मुझे जला रहा है। मेरा रोम-रोम मुझे दुःखी कर रहा है। जिससे पिया-पिया करके मैं पुकारती हूं।

Nijanand App

वाला मारा टाढली ते सहुने वाय, हरि अम विरहणियोने अगिन न माय।
ऊपर टाढो वावलियो धमण धमाय, ए रुत मूने सूतडा सूल जगाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह हवा सबको ठण्डी लगती है, पर हम विरहणियों से वियोग की अग्नि सही नहीं जाती और ऊपर से ठण्डी हवा के झोंके धौंकनी की तरह विरह की अग्नि को और भी भड़का रहे हैं। यह ऋतु मेरे भूले दुःखों को याद कराती है।

वाला महिनो मागसरियो मदमातो, ते तो अमने मारसे रे जोनी जातो।
तारा विरहनी रेहेसे रे वेराट मां वातो, अम ऊपर एम कां नाखी निघातो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! मस्ती से भरा मागसर (अगहन) का महीना आया है। यह तो हम विरहणियों को मार ही देगा। आपके विरह की बातें ही केवल संसार में रह जाएंगी। आपने हमें विरह की चोट पर चोट लगाकर अति दुःखी किया है, पर मैं तो फिर भी पिया-पिया की रट लगा रही हूं।

रे वाला मारा सियालो सुखणियो मागे, पिउजीना सुखडा मां सारी रात जागे।
वालाजीने विलसे रे वड भागे, अमने तो मंदिरियो मसांण थई लागे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे प्रीतम! सुहागिन पत्नियां शरद ऋतु को मांगती हैं जिससे सारी रात प्रीतम के आनन्द में बीते। वह बड़ भागी हैं जो अपने पिया के साथ आनन्द लेती हैं। मुझे तो यह घर आपके बिना शमशान के समान लग रहा है। इसलिए मैं पिया-पिया करके पुकार कर रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १२ ॥

॥ सीत रुत ॥

राग मलार

वाला रुतडी आवी रे सीतलडी लूखी, वेलडियो वन जाय रे सर्वे सूकी।
वसेके वली वाले रे उतरियो फूकी, पिउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे वालाजी खुश्क शीत ऋतु आई है। वन की बेलें और वन सब सूख गए हैं। खासकर उत्तर की हवाओं ने बेलों को जला दिया है। हे धनी! आप अभी तक मुझे क्यों छोड़कर बैठे हो? मैं तो पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

नाहोलिया निस्वासा धमण धमाय, हारे मारा अंगडा मां अगिन न माय।
वाला तारी झालडियो केमे न झंपाय, पिउजी तारो एवडो स्यो कोप केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे धनी! मेरी सांस धौंकनी की तरह चल रही है। जिससे मेरे अंग में विरह की अग्नि समाती नहीं है। हे प्रीतम! आपके विरह की लपटें किसी तरह शान्त नहीं होती हैं। हे धनी! आपकी नाराजगी कैसी है? मैं तो पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

Nijanand App

वाला मारा टाढली ते सहुने वाय, हरि अम विरहणियोने अगिन न माय।
ऊपर टाढो वावलियो धमण धमाय, ए रुत मूने सूतडा सूल जगाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह हवा सबको ठण्डी लगती है, पर हम विरहणियों से वियोग की अग्नि सही नहीं जाती और ऊपर से ठण्डी हवा के झोंके धौंकनी की तरह विरह की अग्नि को और भी भड़का रहे हैं। यह ऋतु मेरे भूले दुःखों को याद कराती है।

वाला महिनो मागसरियो मदमातो, ते तो अमने मारसे रे जोनी जातो।
तारा विरहनी रेहेसे रे वेराट मां वातो, अम ऊपर एम कां नाखी निघातो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! मस्ती से भरा मागसर (अगहन) का महीना आया है। यह तो हम विरहणियों को मार ही देगा। आपके विरह की बातें ही केवल संसार में रह जाएंगी। आपने हमें विरह की चोट पर चोट लगाकर अति दुःखी किया है, पर मैं तो फिर भी पिया-पिया की रट लगा रही हूं।

रे वाला मारा सियालो सुखणियो मागे, पिउजीना सुखडा मां सारी रात जागे।
वालाजीने विलसे रे वड भागे, अमने तो मंदिरियो मसांण थई लागे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे प्रीतम! सुहागिन पत्नियां शरद ऋतु को मांगती हैं जिससे सारी रात प्रीतम के आनन्द में बीते। वह बड़ भागी हैं जो अपने पिया के साथ आनन्द लेती हैं। मुझे तो यह घर आपके बिना शमशान के समान लग रहा है। इसलिए मैं पिया-पिया करके पुकार कर रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १२ ॥

॥ सीत रुत ॥

राग मलार

वाला रुतडी आवी रे सीतलडी लूखी, वेलडियो वन जाय रे सर्वे सूकी।
वसेके वली वाले रे उतरियो फूकी, पिउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे वालाजी खुश्क शीत ऋतु आई है। वन की बेलें और वन सब सूख गए हैं। खासकर उत्तर की हवाओं ने बेलों को जला दिया है। हे धनी! आप अभी तक मुझे क्यों छोड़कर बैठे हो? मैं तो पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

नाहोलिया निस्वासा धमण धमाय, हारे मारा अंगडा मां अगिन न माय।
वाला तारी झालडियो केमे न झंपाय, पिउजी तारो एवडो स्यो कोप केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे धनी! मेरी सांस धौंकनी की तरह चल रही है। जिससे मेरे अंग में विरह की अग्नि समाती नहीं है। हे प्रीतम! आपके विरह की लपटें किसी तरह शान्त नहीं होती हैं। हे धनी! आपकी नाराजगी कैसी है? मैं तो पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

Nijanand App

वाला मारा पोष महिनो रे आव्यो, हांरे अम दुखणियो ने दुख पूरा लाव्यो।
वेरीडो अम ऊपर आवीने झंपाव्यो, हांरे मारूं चीरी अंग मीठडे भराव्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! पूस (पौष) का महीना आया है। हम दुखियों के लिए और दुःख लाया है। इस वैरी ने हमारे ऊपर इस बुरी तरह से झपट लगाई है मानो हमारे अंगों को फाड़कर नमक भर दिया है। हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला टाढी अगिननों वावलियो वाय, नीला टली सूकीने भाखरियो थाय।
पान फूल फल सर्वे झरी जाय, वाला अमे ए रुत केमे न खमाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह ठण्डी हवाएं अग्नि के समान लगती हैं। हरियाली सूखकर सूखी रोटी (पापड़) की तरह हो गयी है। वृक्षों से पत्ते, फूल और फल सब झड़ (गिर) गए हैं। यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा आव्यो रे महिनो माह, जंगलियो वाले रे वनस्पति दाहे।
दाहनां दाधां रूखडियो केवा चरमाय, स्याम विना सुंदरियो एम सोहाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

वालाजी! माघ का महीना आया है। इसने जंगल और वनस्पति को अपनी ठण्ड से जला दिया है। आग की तरह ठण्ड से जले हुए वृक्ष जैसे सूख गए हैं। वैसे ही, हे पिया! आपकी विरहणियों की हालत हो गई है और वह पिया-पिया करके पुकारती हैं।

रे वाला मारे मंदिरिए आवी ने आरोग, हांरे अम विरहणियो ना टालो रे विजोग।
हां रे सुन्दर सेजडीनो आवी लेओ भोग, एता सकल तमारो संजोग।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे वालाजी! मेरे घर में आकर भोजन करो और हम विरहणियों का वियोग हटाओ। आकर सुन्दर सेज का आनन्द लो। यह सब आपके मिलने पर ही सम्भव है। इसलिए, हे प्रीतम! मैं आपको पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १८ ॥

॥ वसंत रुत (फागुन-चैत्र) ॥

राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी वसंत, चंद्र मुख अमृत रस रे झरंत।
वाला वनडू मोरयूं रे कूपलियो बारंत, एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे धनी! बसन्त ऋतु आई है और चन्द्रमा से अमृत की बूंदें बरस रही हैं। हे वालाजी! वन में नई-नई कोंपल निकल रही हैं। इस समय यदि आप नहीं आओगे तो मेरा अन्त हो जाएगा (मैं मर जाऊंगी)। इसलिए हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

Nijanand App

वाला मारा पोष महिनो रे आव्यो, हांरे अम दुखणियो ने दुख पूरा लाव्यो।
वेरीडो अम ऊपर आवीने झंपाव्यो, हांरे मारूं चीरी अंग मीठडे भराव्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! पूस (पौष) का महीना आया है। हम दुखियों के लिए और दुःख लाया है। इस वैरी ने हमारे ऊपर इस बुरी तरह से झपट लगाई है मानो हमारे अंगों को फाड़कर नमक भर दिया है। हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला टाढी अगिननों वावलियो वाय, नीला टली सूकीने भाखरियो थाय।
पान फूल फल सर्वे झरी जाय, वाला अमे ए रुत केमे न खमाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह ठण्डी हवाएं अग्नि के समान लगती हैं। हरियाली सूखकर सूखी रोटी (पापड़) की तरह हो गयी है। वृक्षों से पत्ते, फूल और फल सब झड़ (गिर) गए हैं। यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा आव्यो रे महिनो माह, जंगलियो वाले रे वनस्पति दाहे।
दाहनां दाधां रूखडियो केवा चरमाय, स्याम विना सुंदरियो एम सोहाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

वालाजी! माघ का महीना आया है। इसने जंगल और वनस्पति को अपनी ठण्ड से जला दिया है। आग की तरह ठण्ड से जले हुए वृक्ष जैसे सूख गए हैं। वैसे ही, हे पिया! आपकी विरहणियों की हालत हो गई है और वह पिया-पिया करके पुकारती हैं।

रे वाला मारे मंदिरिए आवी ने आरोग, हांरे अम विरहणियो ना टालो रे विजोग।
हां रे सुन्दर सेजडीनो आवी लेओ भोग, एता सकल तमारो संजोग।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे वालाजी! मेरे घर में आकर भोजन करो और हम विरहणियों का वियोग हटाओ। आकर सुन्दर सेज का आनन्द लो। यह सब आपके मिलने पर ही सम्भव है। इसलिए, हे प्रीतम! मैं आपको पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १८ ॥

॥ वसंत रुत (फागुन-चैत्र) ॥

राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी वसंत, चंद्र मुख अमृत रस रे झरंत।
वाला वनडू मोरयूं रे कूपलियो बारंत, एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे धनी! बसन्त ऋतु आई है और चन्द्रमा से अमृत की बूंदें बरस रही हैं। हे वालाजी! वन में नई-नई कोंपल निकल रही हैं। इस समय यदि आप नहीं आओगे तो मेरा अन्त हो जाएगा (मैं मर जाऊंगी)। इसलिए हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

Nijanand App

एणे समे अबीर गुलाल उछलियां, चोवा चंदन केसर कचोले भरिया।
नाहो नारी रमे रे फागणिऐ मलिया, एणे समे अमें तो घणूं कलकलिया।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

इस समय हर कोई अबीर और गुलाल उड़ाते हैं। अरगजा (चोआ), चन्दन, केसर के कटोरे भर-भर के पति पत्नी फागुन के महीने में आनन्द से खेलते हैं। ऐसे समय में मैं बिलख-बिलखकर रोती हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वाला वन फागणियो रे उछाले, पंखीडा करे रे कलोल बेठा माले।
हांरे अम विरहणियो ना चितडा चाले, आंगणडे ऊभियो पंथडो निहाले।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! फागुन मास में फल-फूल और नए पत्ते आने से वन अच्छे लगते हैं। पक्षी आनन्द से अपने घोंसले में बैठकर किलोल करते हैं। हम दुखियों के चित्त न जाने कहां चले गए हैं कि आंगन में खड़े होकर आपके आने की राह देख रहे हैं और मैं पिया-पिया पुकार रही हूं।

वाला वनडु कोल्यूं कामनी पामी करार, पसु पंखी हरख्या पाडे रे पुकार।
वाला विरह भाजो रे विरहणियो ना आवार, एणे समे न आवो केम प्राणनाआधार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! वन में नई-नई कोंपले देखकर हम कामिनियों को बड़ा आनन्द मिलता है। पशु-पक्षी बड़ी खुशी में मधुर शोर करते हैं। हे वालाजी! इस बार हम विरहिणियों का विरह मिटाओ। ऐसे समय में आप मेरे प्राणाधार क्यों नहीं आते हो? मैं तो पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

वाला मारा चैतरिए एणे मास, पिउजी सो करता विनोद घणा हांस।
वन मांहें विविध पेरे रे विलास, ते अमे अहनिस नाखूं छूं निस्वास।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे मेरे वालाजी! चैत (चैत्र) के इस महीने में मैं अपने प्रीतम से हंसी विनोद का सुख लेती थी। वन के बीच में तरह-तरह के आनन्द लेती थी। वही अब मैं दिन-रात आहें भरती हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वाला मूने ए दिन केम करी जाय, पिउजी विना खिण वरसां सो थाए।
वाला मूने विलखंतां रैणी विहाय, पिउजी विना ए दुख केने न केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे धनी! यह दिन मैं कैसे बिताऊं? पिया के बिना एक पल सौ वर्ष के समान बीत रहा है। मेरी रोते-रोते रात बीतती है। ऐसे दुःख को पिया के बिना कह नहीं सकती। केवल पिया-पिया कहके पुकार रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ २४ ॥

Nijanand App

।। ग्रीखम रुत (वैसाख-जेठ) ।।

राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी ग्रीखम, अमृत रस लावी रे फल उत्तम।
वन फल पाकीने थया रे नरम, वाला तमे एणे समे न आवो केम।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! गर्मी की ऋतु आई है। आम और दूसरे फलों में रस भर गया है। वन फल पककर नरम हो गए हैं। हे वालाजी! इस समय आप क्यों नहीं आते। मैं पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वाला मारा त्रट जमुनाना वृंदावन, हांरे टाढी छांहेडी तले रे कदम।
पिउजी इहां देता रे पावलिए पदम, ते अमे विलखूं छूं वालाने वदन।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे मेरे धनी! वृन्दावन में यमुनाजी के किनारे पर कदम्ब के पेड़ की ठण्डी छाया में आपके चरण कमल पड़ते थे। आपके इस रूप को यादकर बिलखती हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

वैसाख फूल्यो रे वेलडिए वेहेकार, भमरा मदया करे रे गुंजार।
पंखीडा अनेक कला रे अपार, वाला वन विलस्या तणी आवार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! वैसाख (वैशाख) महीने में बेलों में खिले फूल सुगन्ध बिखेर रहे हैं। भंवरे मस्ती में गूंज रहे हैं। पक्षी अनेक तरह से अपार कला दिखा रहे हैं। हे वालाजी! वन में विलास करने का यही सुन्दर समय है और मैं पिया-पिया पुकारती हूं।

वाला रवि तपेरे अंबरियो निरमल, पिउजी कारण वास्या जल रे सीतल।
वदन देखाडो रे वालैया सकोमल, पिउजी अमे पंथडो निहालूं पल पल।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

वालाजी! निर्मल आकाश में सूर्य तप रहा है। आपके लिए हमने ठण्डा जल रखा है। ऐसे समय में आकर अपने सुन्दर स्वरूप के दर्शन दो। जिसे देखने के लिए पल-पल मैं आपकी राह देखती हूं और पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला वनमां मेवो रे महिनो जेठ सार, एणे समे आवो रे नंदना कुमार।
पिउजी तमे सदा रे सुखना दातार, वृज वधु विलखती पाडे रे पुकार।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! जेठ महीने में वन में फलों और मेवों की बहार है। इस समय, हे नन्द के लाल! आओ, तुम सदा सुख के देने वाले हो। हम ब्रज की गोपियां रो-रोकर पुकारती हैं और पिया-पिया पुकार रही हैं।

सखियो तारा सुखडा संभारी ने रुए, हवे अम विजोगणियों ने कोण आवी जुए।
पिउजी विना आंसूडा ते कोण आवी लुए, वाला पछे आवसोसूं अममुए।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे वालाजी! आपके सुखों को याद करके हम रोती हैं। अब हम विरहणियों की हालत कौन देखेगा? हे प्रीतम! आपके विना हमारे आंसू कौन पोंछेगा? हे मेरे वालाजी! क्या आप हमारे मरने के बाद आओगे? मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३० ।।

Nijanand App

।। वरखा रुत ।।

राग मलार

पावसियो आव्यो रे वरखा रुत मांहें, भोमलडी ढांकी रे वादलिए छाहे।
अंबरियो गरजे रे वीजलडी वा वाय, पिउजी विना मारे रे अमने घाए।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे वालाजी! वर्षा ऋतु के बादल आ गए हैं और उन्होंने धरती को ढांप लिया है। आसमान में गर्जना होती है। बिजली चमकती है और हवा चलती है। यह आपके बिना हमारे कलेजे में घाव लगा रहे हैं और मैं पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

एणे समे भेला सहु घर वारी, अधखिण अलगां न थाए नर नारी।
परदेस होय ते पण आवेरे संभारी, पिउजी ऐवी केही अप्राप्त अमारी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

इस समय घर के सब लोग इकट्ठे हो जाते हैं। आधे पल के लिए कोई नर-नारी अलग नहीं होते। परदेश में हों तो भी याद करके आ जाते हैं, परन्तु हे धनी ! हमारी क्यों ऐसी दशा है कि मैं आपको प्राप्त नहीं कर पा रही हूं और पिया-पिया की पुकार करती हूं।

मेघलियो आवीने असाढ धडूके, सेरडियो सामसामी रे ढलूके।
मोरलिया कोईलडी रे टहूके, एणे समे कंथ कामनियो ने केम मूके।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

आषाढ़ (असाढ़) के महीने में घनघोर गर्जना हो रही है। बादलों की टकराहट से पानी की धाराएं बह रही हैं। मोर और कोयल मधुर ध्वनि कर रहे हैं। ऐसे समय में धनी अंगनाओं को कैसे छोड़ सकते हैं? मैं पिया-पिया कर आपको पुकार रही हूं।

वाला मारा भोमलडी रे नीलाणी, मेघलियो वली वली सींचे पाणी।
वीजलडी चमके आभण माणी, रे पिउजी तमे एणे समे वेदना न जाणी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे मेरे वालाजी! धरती हरी भरी हो गई है। ऊपर से बादल बार-बार पानी बरसाते हैं (सींच रहे हैं)। बिजली आसमान में चमकती है। हे धनी ! आपने ऐसे समय में हम विरहिणियों के दुःख को नहीं जाना और मैं पिया-पिया की पुकार कर रही हूं।

रे वालाजी श्रावणियो सलसलियो, आंभलियो आवीने भोमे लडसडियो।
चहु दिस चमके गरजे गलियो, पिउडा तूं हजिए कां अमने न मलियो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! सावन के महीने में धरती पर अधिक पानी से कीचड़ हो गया है। बादल आकर धरती पर झुक रहे हैं। चारों दिशाओं में चमक और गर्जना होती है। हे धनी! इस समय आप हमें क्यों नहीं मिलते। मैं पिया-पिया की पुकार कर रही हूं।

Nijanand App

पिउजी तमे पेहेली कां प्रीतडी देखाडी, माहेंला मंदिरियो कां दीधां रे उघाडी।
पिउजी तमे अनेक रंगे रमाडी, हवे तो लई आसमाने भोम पछाडी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे धनी! पहले आपने क्यों इतना प्रेम दिखाया? हमारे मन के अन्दर के दरवाजे खोल दिए। पहले इतना आनन्द क्यों दिया और अब आसमान से पृथ्वी पर पटक दिया और मैं पिया-पिया करके पुकार करती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३६ ॥

बारहमासी का कलस

राग मलार

वाला मारा खटरुतना बारे मास, हां रे तेना अहनिस त्रण से ने साठ।
वाला तारी रोई रोई जोई में वाट, अम ऊपर एवडो कोप कीधा स्या माट।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! छः ऋतुओं के बारह महीने होते हैं। उनके तीन सौ साठ दिन और रातें होती हैं। जिनमें रो-रोकर आपके आने की राह देखी। हमसे इतने नाराज क्यों हो गए हैं। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा हुती रे मोटी तारी आस, जाण्यूं अमने मूकसे नहीं रे निरास।
ते तो तमे मोकल्यो तमारो खवास, तेणे आवी वछोड्या सांणसिए मास।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे आप पर पूरा विश्वास था कि आप हमें निराश करके नहीं छोड़ोगे। हे धनी! आपने अपने इस दूत ऊधव को भेजा जिसने हमारे शरीर से अपने वचनों की सांसी (संड़सी) से मांस खींचा है (आपको हमारे से जुदा करके ले गया)। मैं पिया-पिया की आवाज करके पुकारती रही।

रे वाला भलुं थयुं रे भ्रांतडी भागी, हांरे तारे संदेसडे अमे जागी।
हांरे एणे वचने रुदे आग लागी, हवे अमे जाण्यूं चोकस अमने त्यागी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! अच्छा हुआ कि हमारा भ्रम मिट गया और आपके सन्देश से हम सावचेत (सावधान) हो गए। आपके इन वचनों से हमारे हृदय में आग लगी है। हम जानती हैं कि आपने निश्चय ही हमें छोड़ दिया है और मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

रे ऊधव तूं भली रे वधामणी लाव्यो,अमारे काजे सूलीने सांणसियो लई आव्यो।
ऊधव तें तो अक्रूर पर इंडू रे चढाव्यो, ऊधव तें दुखडा घणूंज देखाड्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे ऊधव! तू अच्छा समाचार लेकर आया। हमारे लिए फांसी (शूली) के लिए संड़सी लेकर आया है। हे ऊधव! तुम्हारे सन्देश ने हमें बहुत कष्ट पहुंचाया। हे ऊधव! जिस समय अक्रूर कृष्ण को गोकुल से मथुरा ले गये उस समय हमें जो दुःख हुआ, उससे भी अधिक कष्ट देने वाला संदेश रूपी कलश हमारे ऊपर चढ़ाया (हमारे लिए प्राणघातक समाचार लाया)। मैं तो अपने श्याम को पिया-पिया करके पुकारती हूं।

Nijanand App

पिउजी तमे पेहेली कां प्रीतडी देखाडी, माहेंला मंदिरियो कां दीधां रे उघाडी।
पिउजी तमे अनेक रंगे रमाडी, हवे तो लई आसमाने भोम पछाडी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे धनी! पहले आपने क्यों इतना प्रेम दिखाया? हमारे मन के अन्दर के दरवाजे खोल दिए। पहले इतना आनन्द क्यों दिया और अब आसमान से पृथ्वी पर पटक दिया और मैं पिया-पिया करके पुकार करती हूं।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३६ ॥

बारहमासी का कलस

राग मलार

वाला मारा खटरुतना बारे मास, हां रे तेना अहनिस त्रण से ने साठ।
वाला तारी रोई रोई जोई में वाट, अम ऊपर एवडो कोप कीधा स्या माट।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! छः ऋतुओं के बारह महीने होते हैं। उनके तीन सौ साठ दिन और रातें होती हैं। जिनमें रो-रोकर आपके आने की राह देखी। हमसे इतने नाराज क्यों हो गए हैं। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा हुती रे मोटी तारी आस, जाण्यूं अमने मूकसे नहीं रे निरास।
ते तो तमे मोकल्यो तमारो खवास, तेणे आवी वछोड्या सांणसिए मास।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे मेरे वालाजी! मुझे आप पर पूरा विश्वास था कि आप हमें निराश करके नहीं छोड़ोगे। हे धनी! आपने अपने इस दूत ऊधव को भेजा जिसने हमारे शरीर से अपने वचनों की सांसी (संड़सी) से मांस खींचा है (आपको हमारे से जुदा करके ले गया)। मैं पिया-पिया की आवाज करके पुकारती रही।

रे वाला भलुं थयुं रे भ्रांतडी भागी, हांरे तारे संदेसडे अमे जागी।
हांरे एणे वचने रुदे आग लागी, हवे अमे जाण्यूं चोकस अमने त्यागी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! अच्छा हुआ कि हमारा भ्रम मिट गया और आपके सन्देश से हम सावचेत (सावधान) हो गए। आपके इन वचनों से हमारे हृदय में आग लगी है। हम जानती हैं कि आपने निश्चय ही हमें छोड़ दिया है और मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

रे ऊधव तूं भली रे वधामणी लाव्यो,अमारे काजे सूलीने सांणसियो लई आव्यो।
ऊधव तें तो अक्रूर पर इंडू रे चढाव्यो, ऊधव तें दुखडा घणूंज देखाड्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे ऊधव! तू अच्छा समाचार लेकर आया। हमारे लिए फांसी (शूली) के लिए संड़सी लेकर आया है। हे ऊधव! तुम्हारे सन्देश ने हमें बहुत कष्ट पहुंचाया। हे ऊधव! जिस समय अक्रूर कृष्ण को गोकुल से मथुरा ले गये उस समय हमें जो दुःख हुआ, उससे भी अधिक कष्ट देने वाला संदेश रूपी कलश हमारे ऊपर चढ़ाया (हमारे लिए प्राणघातक समाचार लाया)। मैं तो अपने श्याम को पिया-पिया करके पुकारती हूं।

Nijanand App

Nijanand App

रे ऊधवडा विरह मा नंदनो कुंअर, एणी अमकने खरी रे खबर।
विरह मा जोयो लाधे ततपर, ते ऊधव अमे भूलूं केम अवसर।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ११ ।।

हे ऊधव! हमें अच्छी तरह मालूम है कि इस विरह में भी नन्दकुमार हमारे ही बीच में हैं। इस विरह के बाद वह मुझे मिलेंगे। इसीलिए ऐसा अवसर हम क्यों भूलें? पिया-पिया की पुकार ही करते रहेंगे।

रे ऊधवडा अमारो धणी अममा गलियो, तमे आवतांते सांसो सर्वे टलियो।
ऊधव तारी वातें चित अमारो न चलियो, विरह वधारी ऊधव पाछो वलियो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १२ ।।

हे ऊधव! प्रीतम हमारे अन्दर समाए हैं। तुम्हारे आने से हमारे संशय मिट गए। हे ऊधव! तुम्हारी बातों से हमारा विश्वास टूटा नहीं। इस तरह गोपियों का विरह बढ़ाकर ऊधव वापस चले गए और मैं अपने धनी को पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

सखियो हवे घरडा सहुए संभारो, रखे कोई वालाजीने दोष देवरावो।
ए विरह मांहेना मांहेज मारो, सखियो एतो नहीं घर वार उघारो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १३ ।।

हे सखियो! अब तुम होश में आकर अपने तन को सम्भालो। किसी तरह से प्रीतम को दोष मत देना। दुःख को अपने मन में ही समेट लो। हे सखियो! अपने मन के दुःखों को किसी के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए बल्कि हम पिया-पिया पुकारते रहें।

सखियो तमे मूको रे बीजी सहु वात, आपण ऊपर निसंक पडी रे निघात।
दुखे केम मूकिए गोपीनो नाथ, हवे आपोपूं नाखो जेम रहे अख्यात।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १४ ।।

हे सखियो! तुम सब बातों को छोड़ दो। निश्चित ही अपने ऊपर यह कष्ट आ गया। इस दुःख में भी अपने प्राणनाथ को न छोड़ो, बल्कि अपने आपको कुर्बान कर दो जिससे तुम्हारा नाम हो जाए। मैं प्रीतम को याद कर पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

सखियो हवे विना घाय नाखो आप मारी, वालाजीना विरहनी वात संभारी।
वसेके वली राखो घर लोकाचारी, हवे एवी कठण कसोटी खमो नारी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १५ ।।

हे सखियो! वालाजी की बातों को याद कर बिना जाहिरी घाव के अपने अहंकार को नष्ट करो। फिर से सांसारिक दुनियादारी को निभाओ। इस दुःख के समय में कठिन कसौटी पर खरी उतरो और नित्य ही पिया-पिया की पुकार करो।

सखियो हवे विरहनी भारी रे उपाडो, ए अंग मायाना माया मांहें पछाडो।
ए विरह बीजा कहेने मा देखाडो, सखियो विना रखे कोणे बार उघाडो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १६ ।।

सखियो! अब विरह का बोझ सहन करो और माया का तन माया में लगा दो। यह मन के अन्दर की विरह की बातें किसी को मत बताओ। हे सखियो! यह भेद सखियों के अलावा किसी को मत बताओ और पल-पल पिया को याद करो।

Nijanand App

सखियो मारो जीव जीवन मांहें भलियो, अमें माया ग्रही तोहे ते पल न टलियो।
ए वालो अम विना कोणे न कलियो, इंद्रावती कहे अमारो अमने मलियो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १७ ।।

हे सखियो! हमें प्राण प्रीतम मिल गए हैं। हमने माया को ग्रहण किया तो भी उन्होंने हमारा साथ नहीं छोड़ा। हमारे बिना धनी को किसी ने नहीं पहचाना। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हमारे प्रीतम तो हममें मिल गए हैं और मैं पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ २३० ॥

॥ सम्पूर्ण प्रकरण ॥ ९९ ॥ चौपाई ॥ २२०७ ॥

॥ खटरुती सम्पूर्ण ॥

Nijanand App